RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No.
GPOLW-NP/181/2024-26
Total No. of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

फरवरी, 2024

उत्तर प्रदेश के सहकारी आन्दोलन का दर्पण

मूल्य : 15.00

सहकारिता

हिन्दी मासिक पत्रिका

"गांवों में अन्तिम व्यक्ति तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाना सरकार का लक्ष्य"
- जेपीएस राठौर

गांव-प्रदेश एवं देश-विदेश तक की सहकारी गतिविधियों की जानकारी हेतु पढ़ें

''सहकारिता''

(हिन्दी मासिक पत्रिका)

सहकारिता, समाजवाद, कृषि पंचायतीराज एवं ग्रामीण नियोजन का ज्ञान दर्पण

''सहकारिता''

(हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र)

सहकारी गतिविधियों की जानकारी हेतु

सहकारिता पढ़िये, सहकारिता से जुड़िये

सहकारिता

वर्ष-61 अंक-08 फरवरी, 2024

संरक्षक

अनिल कुमार (आई.ए.एस.)
आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता, उ0प्र0

श्रीकान्त गोस्वामी
प्रबन्ध निदेशक/प्रधान सम्पादक

सवीन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (प्रशा0,शिक्षा)

सुनील कुमार दिवाकर
प्रभारी सम्पादक

पवन कुमार वर्मा
आवरण एवं लेजर टाइप/प्रूफ रीडर

सदस्यता शुल्क :

एक प्रति : 15.00 रूपये
वार्षिक (बारह अंक) : 150.00 रूपये (डाक से)
आजीवन : 1500.00 रूपये

सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत या बैंक ड्राफ्ट/चेक द्वारा सम्पादक ''सहकारिता'' यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) के पते पर भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय :

यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) 226 001.
फोन नं0: 0522-4004577 मो0 नं0 : 9415094114
ई-मेल : sahkarita@gmail.com,

स्वत्वाधिकारी यू0पी0 कोऑपरेटिव यूनियन लि0, प्रकाशक, मुद्रक, सुनील कुमार दिवाकर द्वारा सहकारी प्रेस 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रभारी सम्पादक - सुनील कुमार दिवाकर।

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। इसमें सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ0सं0
1.	सम्पादकीय	4
2.	परंपरागत खेती के अलावा कृषि विविधिकरण	5
3.	प्रधानमंत्री जी की प्राथमिकता है महिलाओं की सुरक्षा	7
4.	गांवों में अन्तिम व्यक्ति तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाना सरकार का लक्ष्य- जे.पी.एस.राठौर	9
5.	संत रैदास की सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति - डॉ0 ओ.पी. मिश्र	11
6.	बीपैक्स के माध्यम से हर किसान अपने खेत में बीजों का - डा. उमेश प्रकाश	15
7.	भारत की लोक आस्था हो रही साकार, आ रहे हैं प्रभु श्रीराम हमारे द्वार - प्रदीप कुमार गुप्ता	17
8.	विश्व हिन्दी दिवस - हरी राम यादव फैजाबादी	20
9.	प्लास्टिक - नमिता वैश्य	22
10.	पूस की बादरी - डा. उमेश प्रकाश	23
11.	सहकारिता आंदोलन - सीएमए गोविन्द शुक्ल	24
12.	आंगन - डॉ. अयोध्या प्रसाद	27
13.	गाय : एक दृष्टि से - गौरी शंकर वैश्य ''विनम्र''	28
14.	पशुओं की प्राकृतिक चिकित्सा - रामफेर	32
15.	सच्चा दोस्त - मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	37
16.	'रामराज्य आंदोलन की औपचारिक सहमति का अवसर' -डा. राघवेन्द्र शुक्ल'	38
16.	रामराज की प्रासंगिकता की जन स्वीकार्यता - श्रीमती राजश्री दुबे	41
17.	हाईटेक नर्सरी से संबंधित कार्यो को प्राथमिकता	42

❑❑❑

सहकारी बन्धुओं व पाठकों से अपील

समस्त पाठकों, सहकारी जगत से जुड़े सरकारी व संस्थागत अधिकारी, कर्मचारी तथा सहकारी बन्धुओं से अनुरोध है कि आप अपने जीवन से जुड़ी कोई विशेष उपलब्धि/उत्कृष्ट कार्य हेतु संतुलित व्याख्या, सुझाव व विचार ''सहकारिता'' मासिक पत्रिका, यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) पर भेज सकते हैं, या फिर ई-मेल sahkarita@gmail.com पर कर सकते हैं। आपके विचार सादर आमंत्रित हैं।

- प्रभारी सम्पादक

सुनील कुमार दिवाकर

सम्पादक की कलम से

शिक्षा का आरंभ साक्षरता से होता है। लिपि और भाषा की जानकारी प्राप्त होना मानसिक विकास की आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, उसी की परिधि पूरी कर लेने पर यह संभव होता है कि विकासोन्मुख बनाने वाला साहित्य पढ़ा जाए एवं उस ज्ञान को अर्जित किया जाए जो व्यक्तित्व को निखारने वाली दिशाधारा के साथ संपर्क स्थापित करने में सहायक होता है। साक्षरता के उपरांत जीवन विकास की आवश्यक जानकारी में प्रवीणता प्राप्त करने से ही समग्र शिक्षा का प्रयोजन पूरा होता है।

पदार्थ संसार की, बाह्य जगत की जानकारियाँ प्राप्त करना भी बहुज्ञ होने की दृष्टि से आवश्यक है। वहुज्ञ व्यक्ति तो सांसारिक प्रयोजनों में समय-समय पर काम करते रहते हैं।

इस आधार पर वस्तुओं, व्यवस्थाओं एवं विभिन्न क्षेत्रों के कारणों को समझ सकना संभव होता है। इसी कौशल की आवश्यकता को स्कूली शिक्षा पूरी करता है। गणित, भूगोल, खगोल, इतिहास, पदार्थ विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, अर्थशास्त्र आदि विषयों को विद्यालयों में पढ़ाया जाता है। इस प्रकार के विषयों में प्रवीण बनकर व्यक्ति आवश्यक कला-कौशल संबंधी अपनी जानकारी में अभिवृद्धि करता है। इस बढ़े हुए ज्ञान के आधार पर उसे धन और पद प्राप्त करने में भी सफलता मिलती है। उतने पर भी एक महत्वपूर्ण आवश्यकता में कमी रह जाती है। दृष्टिकोण, व्यक्तित्व एवं सम्मान-सहयोग प्राप्त करने के लिए ऐसे ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है, जो चरित्र एवं व्यवहार का परिवर्तन कर सके। यही है, वह महत्वपूर्ण पक्ष जो मनुष्य के स्तर एवं प्रभाव को संतुलित करता है।

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है, व्यक्तित्व का विकास, जीवन का समग्र विकास। यह कार्य मात्र पुस्तकीय निर्देशनों से नहीं हो सकता। सज्जनता अपनाने की शिक्षा आमतौर से पुस्तकों में रहती है। ऐसा साहित्य भी कम नहीं है। प्रवचनों में भी धर्म संयम के, परलोक की बातें सुनने को मिलती रहती हैं, पर इतने भर से पढ़ने वालों का जीवनक्रम सुधरेगा, ऊँचा उठेगा, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। ऐसा कदाचित हो, कभी हुआ हो कि लोगों ने श्रेष्ठता को किन्हीं लेखों या प्रवचनों के आधार पर अपने जीवन में धारण किया हो। कुसंस्कारों एवं कुविचारों से छुटकारा पाया हो। इसके लिए अभिभावकों, अध्यापकों और शासन को सम्मिलित प्रयत्न करना होगा। ❑

सीएम योगी ने कहा- हमारी सरकार ने उत्तर प्रदेश के किसानों को औषधीय खेती और बागवानी से भी जोड़ा

परंपरागत खेती के अलावा कृषि विविधिकरण अपनाने से किसानों की आय हुई दोगुनी-मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सीमैप द्वारा आयोजित 'किसान मेला' का किया उद्घाटन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पहले की सरकारों में किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य नहीं मिल पाता था। संसद के हर सत्र में किसानों की आत्महत्या का मुद्दा उठता था। 2014 में देश की बागडोर संभालते ही प्रधानमंत्री नरेंद्र ने 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने का लक्ष्य रखा। इसके लिए उन्होंने साइल हेल्थ कार्ड, प्रधानमंत्री फसल बीमा, कृषि सिंचाई, किसान सम्मान निधि जैसी कई योजनाएं शुरू कीं और किसानों को वैज्ञानिक शोध एवं इनोवेशन से जोड़ा। इसी का परिणाम है कि वर्ष 2018 से अन्नदाता किसानों को उनकी लागत का डेढ़ गुना दाम मिलना प्रारंभ हुआ।

सीएम योगी ने पिकनिक स्पाट रोड स्थित केन्द्रीय औषधि एवं सगन्ध पौधा संस्थान (सीमैप) द्वारा आयोजित 'किसान मेला' का उद्घाटन किया।

इस दौरान उन्होंने कहा कि आज उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि देश के अन्य राज्यों का किसान प्रधानमंत्री मोदी के विजन के अनुरूप परंपरागत खेती के

अलावा कृषि विविधिकरण भी अपना रहा है। इससे उनकी आय दोगुनी हुई है। सीएम योगी ने कहा कि हमारी सरकार ने उत्तर प्रदेश के किसानों को औषधीय प्राप्त कर रहा है। यह अन्नदाता किसानों के जीवन में परिवर्तन का एक बड़ा माध्यम बना है।

सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश की भूमि अत्यंत उर्वरक है। साथ ही यहां प्रचुर मात्रा में जल की उपलब्धता है। उन्होंने कहा कि देश की 16 फीसदी आबादी उत्तर प्रदेश में रहती है। 11 फीसदी कृषि योग्य भूमि होने के बावजूद 22 फीसदी से अधिक खाद्यान्न का उत्पादन अकेले उत्तर प्रदेश करता है। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश में हमारे 89 कृषि विज्ञान केंद्र हैं। चार राज्य कृषि विश्वविद्यालय हैं और पांचवां स्थापित होने जा रहा है। कृषि, बागवानी और आयुष से जुड़े ऐसे तमाम संस्थान प्रदेश में मौजूद हैं। सीमैप निरंतर इन संस्थानों की विजिट करे। इससे संस्थानों में नवाचार और शोध को बढ़ावा मिलेगा।

प्रदर्शनी का उद्घाटन किया

सीएम योगी ने मेले में प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। साथ ही मेले में लगे स्टालों का अवलोकन किया और किसानों से बातचीत भी की। मेले में 15 राज्यों से ज्यादा के चार हजार से ज्यादा किसान शामिल हुए। औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों के लिए सीमैप एक एरोमा मिशन एप भी लांच करेगा, जो किसानों और इंडस्ट्री के बीच एक ब्रिज का काम करेगा। ❑

मुख्यमंत्री ने जनपद गोरखपुर में 1,150 जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन वितरित कीं, 02 संजीवनी मेडिकल वैन का शुभारम्भ किया

प्रधानमंत्री जी की प्राथमिकता है महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बन : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्राथमिकता में सदैव महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान व स्वावलम्बन रहा है। प्रधानमंत्री 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' जैसे कार्यक्रमों के द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जनधन योजना, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना एवं अन्य योजनाओं व कार्यक्रमों द्वारा महिला कल्याण व सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है। महिला सशक्तिकरण के विभिन्न कार्यक्रमों की पराकाष्ठा के रूप में प्रधानमंत्री जी ने 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' के द्वारा लोक सभा व विधान सभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का कार्य किया है।

मुख्यमंत्री ने यह विचार जनपद गोरखपुर में 1,150 जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन वितरण कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किए। इस अवसर पर मुख्यमंत्री जी ने भारतीय स्टेट बैंक के सी0एस0आर0 के माध्यम से संचालित 02 संजीवनी मेडिकल वैन का शुभारम्भ भी किया। उन्होंने कहा कि मकर संक्रान्ति एवं लोहड़ी के एक दिन पूर्व जे0के0 समूह एवं एन0एस0डी0एल0 के तत्वावधान में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कार्यक्रम 'मिशन शक्ति' के तहत नारी स्वावलम्बन और नारी सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण कदम है। आधी आबादी को सशक्त किये बिना भारत को सशक्त व समर्थ नहीं बनाया जा सकता। इसके लिए उन्हें सुरक्षा का वातावरण देना पड़ेगा। उनके स्वावलम्बन का मार्ग प्रशस्त करना पड़ेगा। जब महिलाओं की सुरक्षा व स्वावलम्बन का मार्ग प्रशस्त होगा, तो स्वतः ही उनके प्रति सम्मान का भाव पैदा होगा। सुरक्षा, स्वावलम्बन व सम्मान तीनों एक दूसरे से जुड़े हैं। आज के इस कार्यक्रम में आधी आबादी के स्वावलम्बन के लिए सिलाई मशीन वितरण के पूर्व उन्हें 10 दिन का प्रशिक्षण भी दिया जा चुका है। यह एक अभिनव प्रयास है। आज यहां जिनको सिलाई मशीन दी गयी हैं, वह उनके परिवार के लिए निःसंदेह आर्थिक स्वावलम्बन का आधार बनेगी। यह कार्यकम महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन के साथ गोरखपुर को रेडिमेड गारमेंट

के हब के रूप में विकसित करने में योगदान दे सकता है। लाभार्थी महिलाओं को सिलाई मशीन प्रशिक्षण महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा दिया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री की प्रेरणा से उत्तर प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए अनेक कार्य किये गये हैं। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना आदि योजनाएं महिलाओं के कल्याण के लिए चलाई जा रही है। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना में बेटी के जन्म से स्नातक तक की पढ़ाई के लिए सरकार आर्थिक योगदान देती है। पहले इस योजना में 15 हजार रूपये की धनराशि का प्रावधान था, जिसे आगामी वित्तीय वर्ष में 25 हजार रूपये करने जा रहे हैं। बेटी की शादी के लिए प्रदेश सरकार द्वारा 51 हजार रूपये की धनराशि दी जाती है। वर्तमान में प्रदेश में 01 करोड़ नागरिकों को निराश्रित महिला पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन एवं दिव्यांगजन पेंशन के रूप में 1000 रूपये की धनराशि प्रतिमाह उपलब्ध करायी जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जे0के0 समूह उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण औद्योगिक घराना है। इसने कानपुर को एक समय देश में औद्योगिक क्रान्ति का अग्रदूत बना दिया था। जे0के0 समूह कानपुर में भारत की परम्परा के अनुसार एक भव्य मंदिर बनाने के साथ कॉलेज, शैक्षिक संस्था, अस्पताल बनाकर जनता की सेवा कर रहा है। औद्योगिक गतिविधियों के साथ सेवा के कार्य में जुड़कर महिला स्वावलम्बन के लिए कार्य कर रहा है। यह अत्यंत सराहनीय कार्य है। आज सिलाई मशीन के वितरण के साथ प्रशिक्षकों को भी सम्मानित किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कार्यक्रम में सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि हेतु 02संजीवनी मेडिकल वैन का शुभारम्भ भी हुआ है। इन मेडिकल वैन में से एक गोरखपुर के वनटांगिया समूह और सीमा क्षेत्र की थारू

जनजातियों को मेडिकल सेवा उपलब्ध करायेगी और दूसरी मेडिकल वैन वाराणसी के माध्यम से सोनभद्र एवं चन्दौली के सभी गरीब जरूरतमंद जनजातीय लोगों को मेडिकल सेवा उपलब्ध करायेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब मेडिकल वैन का प्रस्ताव उनके पास आया, तो उन्होंने सभी स्वास्थ्य सुविधाओं से युक्त इस मेडिकल वैन को पूर्वी उत्तर प्रदेश के दो प्रमुख क्षेत्रों में संचालित करना ज्यादा उचित समझा। जनपद वाराणसी में इस तरह का कार्यक्रम सेवा भारती द्वारा पहले चलाया जा रहा है, जो मुसहर जनजाति के स्वास्थ्य

सुविधा के कार्य को बड़े सेवा प्रकल्प के रूप में बढ़ा रही है। सेवा भारती, जनपद वाराणसी में इस सेवा को आगे बढ़ाकर वहां के वनवासी व जनजाति समूह के बीच में जाकर इस कार्यक्रम को करेंगी। जिला प्रशासन के सहयोग से इस वैन के माध्यम से डॉक्टर, पैरामेडिक्स, दवा एवं अन्य प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध होंगी। यह वैन दूर दराज के गावों में, मलिन बस्तियों में थारू व वनटांगिया समाज व सीमावर्ती क्षेत्रों में जाकर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ उपलब्ध करायेंगी। इससे हजारों लोग लाभ ले पायेंगे। ❑

गांवों में अन्तिम व्यक्ति तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाना सरकार का लक्ष्य-जेपीएस राठौर

प्रधानमंत्री का संकल्प है कि देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है। 2047 तक अमृतकाल के दौरान माननीय केन्द्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह का लक्ष्य है कि कृषि के क्षेत्र में कोआपरेटिव का योगदान 50 प्रतिशत होना चाहिए और डिपोजिट 25 प्रतिशत तक होना चाहिए। इसी लक्ष्य को लेकर कार्यशाला में चर्चा हुई कि किस तरह से नई टेक्नालाजी को लेकर एवं नये इनोवशन को लेकर लोगों की क्या आवश्यकता है उस तरह से प्रोडक्ट डिजाइन करें ताकि उन्हें समय से लोन मिल सके और उनकी जरूरतें पूरी हो सकें।

उत्तर प्रदेश कोआपरेटिव बैंक द्वारा आयोजित नेफस्काब के तत्वावधान में अमृतकाल (2022-47) में राज्य सहकारी बैंकधजिला सहकारी बैंकों के व्यवसाय में वृद्धि के उपायों पर नेफस्काब द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जे.पी. एस. राठौर ने यह बातें सहकारिता भवन लखनऊ स्थित सभागार में कही।

सहकारिता मंत्री ने कहा कि आने वाले समय में उत्तर प्रदेश कोआपरेटिव बैंक अग्रणी भूमिका निभाते हुए गांवों में अन्तिम व्यक्ति तक बैंकिंग सुविधाएं पहुंचाना सरकार का लक्ष्य है तथा सभी जिला सहकारी बैंकों को नेफस्काब का सदस्य बनाने का दिसम्बर, 2023 में निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि 3200 पैक्स कम्प्यूटरीकरण किया जा चुका है तथा आने वाले 06 महीने में लगभग सभी पैक्स का कम्प्यूटरीकरण पूर्ण कर लिया जायेगा। तथा सभी पैक्स को 10-10 लाख रूपये प्रदान कर रहे हैं, वो भी ब्याजमुक्त, जिसका पूरा ब्याज प्रदेश सरकार देगी। यानी की 750 करोड़ रूपये सभी पैक्स को दिलवाया है ताकि वह अपना बिजनेस आसानी से कर सकें। उन्होंने कहा कि सभी 16 जिला सहकारी बैंक घाटे में थी, उनमें से 11 को हम लाभ में ला चुके हैं तथा आने वाले 31 मार्च, 2024 तक हमारी सभी बैंकों को लाभ में ले आएंगे।

चेयरमैन एन.ए.एफ.एस.सी.ओ.बी. (नेफस्काब) के0आर0 राव ने कहा कि कोआपरेटिव क्रेडिट की थ्री टायर सिस्टम अपेक्स कोआपरेटिव बैंक, जिला सहकारी बैंक, पैक्स को मिलकर साथ काम करना होगा तभी बैंकिंग व्यवस्था मजबूत होगी तथा हमें अपने टेक्नोलाजी में अद्यतन सुधार करने का प्रयास करते रहना चाहिए। इस अवसर पर आर.सी.एस.

यूपी अनिल कुमार, अतिरिक्त आयुक्त व अतिरिक्त रजिस्ट्रार (प्रशासन) श्रीमती ईशा प्रिया, एमडी एन. ए.एफ.एस.सी.ओ.बी. व अध्यक्ष आई.सी.बी.ए. बी0 सुब्रह्मण्यम, चेयरमैन यू.पी.सी.बी. जे0बी0 सिंह, एमडी यू.पी.सी.बी. आर0के0 कुलश्रेष्ठ, डायरेक्टर बर्ड निरूपम मेहरोत्रा, सीजीएम नाबार्ड ए0के0 डोरा तथा सभी जिला सहकारी बैंकों के चेयरमैन उपस्थित थे।

3000 से अधिक पैक्स इकाईयों में कम्प्यूटरीकरण का कार्य प्रगति के अंतिम चरण में - जे0पी0एस0 राठौर

उत्तर प्रदेश के सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जे0पी0एस0 राठौर ने अपने विधानसभा स्थित कार्यालय में पैक्स में कम्प्यूटरीकरण कार्य की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि प्रदेश में कुल 7500 पैक्स इकाइयों में कम्प्यूटरीकरण का कार्य किया जा रहा है, जिनमें 3000 से अधिक पैक्स में कम्प्यूटरीकरण का कार्य अंतिम चरण में है। शेष 4500 पैक्स में भी कम्प्यूटरीकरण का कार्य शीर्ष प्राथमिकता पर किया जायेगा। मुख्यमंत्री जी का भी इस पर विशेष फोकस है। उन्होंने कहा कि कम्प्यूटरीकरण का कार्य पूरा हो जाने से पैक्स इकाईयों की कार्य प्रणाली में पारदर्शिता आयेगी और किसानों को ऋण आदि लेने में सरलता होगी और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने में सफलता प्राप्त होगी। साथ ही संबंधितों की जवाबदेही भी सुनिश्चित होगी।

श्री राठौर ने बताया कि इस कम्प्यूटरीकरण योजना के तहत उ0प्र0 सहकारी ग्राम विकास लि0 की कुल 323 शाखाओं, 18 क्षेत्रीय कार्यालय एवं मुख्यालय सहित कुल 342 इकाईयों को कम्प्यूटरीकृत किया जायेगा। योजना की कुल लागत का 75 प्रतिशत राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा 40:60 के अनुपात में वहन किया जायेगा एवं शेष 25 प्रतिशत बैंक द्वारा स्वयं वहन किया जायेगा। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में सहकारिता मंत्रालय ''सहकार से समृद्धि'' के विजन को साकार करने और करोड़ों किसानों को समृद्ध बनाने के प्रति कटिबद्ध है। इस दिशा में प्रदेश के कृषि और ग्रामीण विकास बैकों और सहकारी समितियों के पंजीयक कार्यालयों का कम्प्यूटरीकरण सहकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा उठाए गए कई महत्वपूर्ण कदमों से एक है।

सहकारिता मंत्री ने बताया कि कल नई दिल्ली में केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा 225 करोड़ रूपये की अनुमानित लागत से कृषि और ग्राम विकास बैकों और सहकारी समितियों के पंजीयक कार्यालयों का कम्प्यूटरीकरण परियोजना का शुभारम्भ किया गया। यह कार्यक्रम सहकारिता मंत्रालय द्वारा, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम (एनसीडीसी) के सहयोग से आयोजित किया गया। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार एलडीबी में भी कम्प्यूटरीकरण कार्य को प्राथमिकता दी जा रही है और शीघ्र ही कम्प्यूटरीकरण का कार्य पूरा करा लिया जायेगा। इससे बैकों की कार्य क्षमता में बढ़ोत्तरी होगी और किसानों एवं अन्य व्यवसायियों को सुविधा प्राप्त होगी। इस अवसर पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि कम्प्यूटरीकरण का कार्य शीघ्र पूर्ण किया जाए, जिससे किसानों को लाभान्वित किया जा सके। इस अवसर पर एमडी यूपीसीबी आर0के0 कुलश्रेष्ठ, एमडी एलडीबी शशिरंजन कुमार राव एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

संत रैदास की सामाजिक और धार्मिक क्रान्ति

डॉ0 ओ.पी. मिश्र,
डी.लिट (अर्थशास्त्र)
अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्रान्त सम्मान–2023
अवन्तीबाई साहित्य सम्मान–2021
विद्या भूषण सम्मान–2014

बनारस के निकट महुआडीह में रैदास का जन्म सन 1378 और मृत्यु 1527 में चित्तौड़गढ़ में हुई थी। उनकी मृत्यु (हत्या) के पीछे रहस्य है जिसके उद्घाटन के लिए शोध की आवश्यकता है। लगभग 151 वर्ष जी कर उन्होंने जीवेम शरद शत की आदर्श आयु को और विस्तार दिया। अनुभववृद्ध लोगों ने कहा है-

''राह छोड़ि तीनै चलै सायर सिंह सपूत''

रैदास ने उस समय जो सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक क्रियाकलापों की राह थी उसे छोड़ा

और अपनी एक नई राह बनाई। उससे वे संत कवि के रूप में ही नही जाने गये बल्कि गुरू की पदवी से भी विभूषित हुए। रैदास की स्कूली शिक्षा बहुत कम थी किन्तु देशटन, ध्यान मनन और सत्संग से उन्होंने पर्याप्त विवेक प्राप्त कर लिया था। अवधी, संस्कृत, ब्रज, अपभ्रंश, संस्कृत और प्राकृत भाषाओं की भी उन्होंने सम्यक् जानकारी हासिल कर ली थी। उनकी बानियाँ, पद और साखियाँ इसका प्रमाण है।

पिता (रग्घू) और माता (घूरबनिया) ने रैदास का विवाह लोना नामक युवती से करा दिया था, किन्तु उनका मन परमतत्व की शक्ति में रमा रहता था। निठल्ला समझ कर माँ-बाप ने लगे और आजन्म जूते गाँठ कर जीवन-निर्वाह करत रहे। जूते गाँठते हुए भी वे राम/गोविन्द/गोपाल/ जगदीश/ कृष्णा/विट्ठल आदि का सुतिमरन करते रहते थे। निर्मल हृदय रैदास की भक्ति में इतनी ताकत थी कि उसने उनका परम तत्व से साक्षात्कार करा दिया था। इसकी पुष्टि उनके समकालीन संत कबीर ने इस दोहे में की है-

मृग-तृष्ना जल छाँड बावरे सुधारस आसा।
ध्रुव, प्रहलाद, शुकदेव पिया और पिया रविदास।
उन्होंने स्वयं लिखा है-
नीचे से प्रभु ऊँचा कियो है
कहि रैदास चमारा।

संत कवि रैदास ने तत्कालीन वर्ण व्यवस्था पर प्रबल प्रहार किए और जातियों की पहचान बदल दी। उन्होंने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र की परिभाषा निम्नलिखित ढंग से की-

ब्राह्मण -काम क्रोध मद् लोभ तजि करत धरम का कार।
सोई ब्राह्मण जानाहि, कहि रैदास चमार।।
क्षत्रिय - दीन दुःखी के हेत जो वारे अपने प्रान।
रविदास उह नर सूर को सच्चा क्षत्रिय जान।
वैश्य - साँची हाटी पैठकर सौदा साँचा देय।
तकरी तोल साँच की, रविदास वैस है सोय ।।
शूद्र - रविदास जो अति पवित्र है सोई शूद्र जान।
जउ कुकर्मी अशुद्ध जन तिन्हहिं न शूद्र जान।।

यह परिभाषाएं मनुस्मृति में दी गयी उपर्युक्त जातियों की परिभाषाओं से सर्वथा भिन्न है। मनुस्मृति मे ब्राह्मण के कर्म पढ़ना-पढ़ाना बताए गए। रैदास ने ब्राह्मणों के लक्षण चारित्रिक गुण बताए। मनुस्मृति में क्षत्रिय का कार्य प्रजा की रक्षा करना तो रैदास ने उनका कार्य दीन दुःखियों की रक्षा करना बताया। मनुस्मृति में वैश्य का काम व्यापार करना तो रैदास ने उनका कार्य सच्ची तराजू पर सच्चा सौदा देना बताया। मनुस्मृति में शूद्र का कार्य अन्य तीन वर्णो की सेवा करना लिखा है किन्तु रैदास ने कहा कि शूद्र वह है जो अधिक पवित्र व्यक्ति है। इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है दोनों (मनुस्मृति एवं रैदास) परिभाषाओं में जमीन और आसमान का अन्तर है। संत रविदास ने बताया कि करम (कर्म) ही किसी को ऊँचा और नीचा बनाता है-

रविदास जन्म के कारनै
होत न कोऊ नीचे।
नर को नीच कर डारि है,
ओछे करम को कीच।।

संत रैदास ने ऊँच-नीच की ऊबड़-खाबड़ राह को समतल कर एक नई राह बनाई। उनके अनुसार चूंकि सभी परमात्मा की संताने है इसलिए वे सभी बराबर है। उन्होंने कहा-

एक ज्योति तै सभ उपजै
तउ ऊँच-नीच कस मान।

गुरू रैदास ने अपने प्रवचनों में बताया कि कुम्हार (सिरजन हार) ने एक ही माटी से सभी को बताया है इसलिए सभी समान है-

एकै माटी के सभ भाँड़े,
सभ का एकै सिरजन हार।
रैदास व्यापै एकौ घट भीतर,
सभ को एकै गडै कुम्हार।।

ब्राह्मण का और चमार में एक ही परमात्मा होने के कारण वे समान है। उनके ऊँच-नीच का भाव अहंकारियों तथा पाखंडियों द्वारा पैदा किया गया है।

संत रैदास ने हिन्दु-मुस्लिम एकता की जो राह बनाई वह आज भी अनुसरणीय है। वे लिखते है-

रविदास उपजइ सभ इक नूर ते,
ब्राह्मण मुल्ला सेख।
सभ को करता एक है,
सभ कूँ एक ही पेख।।

उन्होंने बार-बार समझाया कि हिन्दू तथा तुरक एक ही द्वार से निकले हैं और उनके प्राण, पिंड, लोहू तथा मांस एक जैसा है अतः उनमे कोई भेद नहीं।

संत रैदास ने धर्म की भी एक नई राह बनाई। 18 वर्ष की आयु में उन्होंने राम-जानकी की पूजा

प्रारम्भ की थी। चूँकि शूद्रों के लिए पूजा पाठ तथा मंदिर प्रवेश निषिद्ध था, इसलिए उन्होंने सगुणोपासना छोड़कर कृष्ण की निर्गुण भक्ति प्रारम्भ की। उन्होंने अपने इष्ट को कई नामों से पुकारा है किन्तु अधिकांश नाम कृष्ण के है। निर्गुण उपासना के बल पर उन्होंने इतनी सिद्धि और मान्यता प्राप्त कर ली थी कि उच्च वर्ण की साधिकाओं (राजस्थान की झाली रानी और मीराबाई) तक ने उन्हें अपना गुरू बनाया।

संतकवि रविदास ने मंदिरों और मस्जिदों की निरर्थकता तथा मुर्तिपूजा की विकृति को अपनी बानियों और साखियों में उजागर किया। उन्होंने सभी को उद्‌बोधित किया कि ईश्वर एवं अल्ला मंदिरों तथा मस्जिदों में नही बल्कि भक्तों के हृदय में रहता है। उन्होंने लिखा-

मस्जिद सो धिन्न नही मंदिर सो नहि प्यार।
इनमें अल्ला राम नहीं कहै रैदास विचार।।

ईश्वर और अल्ला की खोज हृदय में होनी चाहिए क्योंकि वह वहीं रहता है-

का मथुरा का द्वारिका, का काशी हरिद्वार।
रविदास खोजा दिल आपना, तउ मिलिया दिलदार।।

संत रैदास ने पूर्ण ब्रह्म का विचार प्रस्तुत किया है। उनका यह पूर्ण ब्रह्म पहले के ब्रह्म से बहुत आगे है। वह ब्रह्म अधूरा है जिसकी भक्ति का अधिकार सब को नहीं होता है। पूर्ण ब्रह्म वह है जिसको भेजने का अधिकार सभी को होता है। उनका पूर्ण ब्रह्म सभी के लिए सुगम है तथा सभी जगह रहता है। वे लिखते है-

पूरण ब्रह्म बसै सब ठाहीं।
कह रैदास मिलै सुख साई।।

संत रविदास इसी पूर्ण ब्रह्म के निर्गुण उपासक थे। इस उपासना/ भक्ति /साधना में नाम संर्कितन तथा सुमिरन ही महत्वपूर्ण होता है। उनके अनुसार नाम सुमिरन से ही सच्चे तत्व को प्राप्त किया जा सकता है न कि शारीरिक क्रियाओं से । वे बताते हैं-

इड़ा पिंगला सुसुम्णा,
विध चक्र प्ररायाम।
रैदास हो सबहिं छाड़ियों,
जबकि पाइहु सतनाम।।

उनके समय में मुर्तिपूजा सगुण भक्ति का आधार थी। गुरू रैदास ने बताया कि ईश्वर, भगवान, परमात्मा केवल पत्थर की मूर्ति में ही नही होता। वह कण-कण में व्याप्त है। मूर्ति पूजा निःसार है क्योंकि उसमें ईश्वर नहीं रहता । उन्होंने जोर देकर कहा कि मूर्तिपूजा से कोई लाभ नहीं है-

याकी सेव सूल नहीं भाजै,
कटै न संसै फाँस रे।
सोचि विचार देखि या मूरति,
यूँ छाँड़ि रैदास रे।।

उन्होंने मूर्ति पूजकों से प्रश्न किया कि यदि मूर्ति में परमेश्वर है तो वह पानी में डूब क्यों जाती है ? मूर्ति में यदि ईश्वर हो तो उसे पानी पर तैरना चाहिए-

मूरति माहिं बसे परमेश्वर
तो पानी माहि तिरै रे।

उन्होंने फिर समझाया कि मूर्ति पूजा में अपवित्र वस्तुओं जैसे बछड़ो द्वारा जूठा किया दूध, भँवरों द्वारा चूसा फूल और मछलियों द्वारा बिगाड़ा जल, का प्रयोग होता है। इन अपवित्र वस्तुओं से परम पवित्र की पूजा पाखण्ड है।

संत रैदास ने गुरू और साधु की महिमा का भरपूर बखान किया है। वे लिखते है-

भौंसागर दुतर अति, किधूँ मूरिख यहु जान।
रविदास गुरू पतवार है, नाम नाव करि जान।।

उनके मतानुसार साधु की संगति ही परमात्मा से सतसंग है। जिसप्रकार स्वाँति नक्षत्र की वर्षा की एक बूँद सीप के मुँह में गिरकर उसे मोती बना देती है उसी प्रकार साधु-संतो की संगति भक्त को काँच

से कंचन बना देती है। उनके मतानुसार साधु वह है जो जग में लिप्त न होकर गोविन्द में रमा रहे, जो निरबैर हो और जिसके मन में अभिमान न हो। ऐसा साधु अपने को तो तारता ही है अपने भक्तों को भी तार देता है।

संत रविदास के युग में शूद्रों के लिए शिक्षा पर प्रतिबंध था। उन्होंने शूद्रों के लिए सामान्य पाठशाला के स्थान पर सर्वोच्च पाठशाला का मार्ग दिखाया। उन्होंने कहा-

मन रे! चलि चटसार पढ़ाऊँ।
चितु कागद करि मसि नैनन री,
बारापड़ी सिषाऊँ।

इसी रर्रा मंमा की शिक्षा से परमतत्व की सम्भव है। इस पाठशाला में पढ़कर इसी रर्रा मंमा की शिक्षा से परमतत्व की प्राप्ति सम्भव है और मुक्ति को प्राप्त कर सकते है। तुलती, कबीर, धन्ना, पीपा, नानक और स्वयं रैदास किसी शिक्षा संस्था में नहीं पढ़े किन्तु साधना, सत्संग और चिंतन-मनन से वह विद्या प्राप्त को जो उनकी तथा समाज की मुक्ति का साधक बनी।

उपर्युक्त संक्षिप्त विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि संत रविदास लकीर के फकीर नहीं थे। अपने समय की सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक कर्मकाण्डों के प्रति उन्होंने विद्रोह किया। उन्होंने विद्रोह किया। उन्होंने समाज और धर्म में क्रान्ति (बदलाव) लाने का सफल और सार्थक प्रयास किया। उनकी बनाई राह आज भी सामाजिक सौमनस्य लाने, धार्मिक सदभाव जगाने और धर्म के मर्म को समझाने में सहायक हैं।

❑ पता : 610/368 जी, केशवनगर,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020
मो0 : 9559419018

प्रदेश सरकार हर ब्लॉक पर खेलो यू0पी0 सेण्टर स्थापित करेगी

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने युवा ऊर्जा के प्रोत्साहन के लिए नया प्लेटफॉर्म दिया है। इसके परिणामस्वरूप विगत 10 वर्षों से देश में खेल के लिए माहौल बना है। उत्तर प्रदेश में देश की लगभग 16 फीसदी आबादी निवास करती है। प्रधानमंत्री के विजन को मिशन मानकर प्रदेश में जो कार्य प्रारम्भ हुए, उनका परिणाम है कि एशियन तथा पैरा एशियन गेम्स में प्रदेश के खिलाड़ियों ने लगभग 25 प्रतिशत पदक प्राप्त किये हैं। नेशनल गेम्स में भी प्रदेश के खिलाड़ियों ने अच्छा किया है।

मुख्यमंत्री 19वें एशियाई खेल-2022, चतुर्थ पैरा एशियाई खेल-2022 एवं 37वें राष्ट्रीय खेल-2023 में पदक अर्जित करने वाले एवं प्रतिभाग करने वाले प्रदेश के 189 उत्कृष्ट खिलाड़ियों को 62 करोड़ रूपये की पुरस्कार राशि के वितरण कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। कार्यक्रम में केन्द्रीय युवा कार्य एवं खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर भी सम्मिलित हुए।

मुख्यमंत्री ने सुश्री दीप्ती शर्मा (क्रिकेट), सुश्री पारूल चौधरी (एथलेटिक्स), अखिल श्योराण (शूटिंग) तथा अर्जुन देशवाल (कबड्डी) को पुलिस उपाधीक्षक, पुनीत कुमार (नौकायन) एवं सुश्री प्राची (एथलेटिक्स) को जिला युवा कल्याण अधिकारी और अर्जुन सिंह (क्याकिंग कैनोइंग) को यात्री/मालकर अधिकारी के पद के लिए नियुक्ति पत्र प्रदान किए। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश में खेलों के विकास पर आधारित एक लघु फिल्म का प्रदर्शन किया गया। मुख्यमंत्री ने सभी पुरस्कृत खिलाड़ियों एवं प्रशिक्षकों को बधाई दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि विगत एक सप्ताह बहुत महत्वपूर्ण रहा है। 22 जनवरी को 500 वर्षों के इंतजार के बाद प्रभु श्रीरामलला नव्य अयोध्या में अपने दिव्य और भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं।

यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन ने भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 की सदस्यता ग्रहण की

बीपैक्स के माध्यम से हर किसान अपने खेत में बीजों का उत्पादन कर सकेगा -जे0पी0एस0 राठौर

प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति के साथ, बीजोत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने व बीजों के वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद मिलेगी

यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन (पी0सी0यू0) ने भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 संस्था के 10 लाख मूल्य के एक हजार शेयर लेकर उसकी सदस्यता ग्रहण की है। यू0पी0कोआपरेटिव यूनियन उ0प्र0 की शीर्ष संस्था है, जिसको इस संस्था का प्रथम शेयर प्रमाण पत्र-प्राप्त हुआ है। पी0सी0यू के प्रबन्ध निदेशक श्रीकान्त गोस्वामी ने संस्था से प्राप्त प्रथम शेयर प्रमाण-पत्र सहकारिता मंत्री को प्रदान किया।

प्रदेश के सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जे0पी0एस0 राठौर ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 प्रदेश की ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को गति के साथ-साथ प्रदेश को बीजोत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने और बीजों के वैश्विक बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद करेगी और इसका सबसे बड़ा फायदा छोटे किसानों महिलाओं और युवाओं को होगा। कहा कि भारत सरकार के सहकारिता मंत्रालय ने बहुराज्य सहकारी समितियां अधिनियम 2002 के तहत भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 को लान्च किया था। बीपैक्स के माध्यम से हर किसान अपने खेत में बीजों का उत्पादन कर सकेगा। केन्द्रीय सहकारिता मंत्रालय ने घरेलू उत्पादन के साथ-साथ प्रमाणित बीजो के निर्यात को बढावा देने के लिए एक नई सहकारी समिति लि0 की स्थापना की है। बीपैक्स ग्राम स्तरीय सहकारी समितियां है, जो राज्य स्तर पर राज्य सहकारी बैंको की अध्यक्षता वाली त्रिस्तरीय सहकारी ऋण संरचना में अन्तिम कड़ी के रूप में काम करती है। राज्य स्तरीय सहकारी बैंक से ऋण जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों को हस्तान्तरित किया जाता है। जो जिला स्तर पर संचालित होते है। जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक बीपैक्स के साथ काम करते है, जो सीधे किसानो के सम्पर्क में रहते है। व्यक्तिगत किसान पैक्स के सदस्य होते है और पदाधिकारी उनके भीतर से चुने जाते है। एक गांव में कई पैक्स हो सकते है। बीपैक्स किसानों को विभिन्न कृषि और कृषि गतिविधियो के लिए अल्पकालिक और मध्यम अवधि के कृषि ऋण प्रदान करते है। वर्तमान में प्रदेश 7546 बी पैक्स है। वर्तमान प्रदेश में लगभग एक करोड कृषक सदस्यों लाभान्वित किया जा रहा है।

सहकारिता मंत्री ने बताया कि आने वाले दिनों में भारत को बीज संरक्षण, संवर्धन और अनुसंधान के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में भारतीय बीज सहकारी

समिति लि0 का बहुत बड़ा योगदान रहेगा। भारत दुनियां के उन कुछ देशों में से एक है, जहां कृषि को व्यवस्थित रूप से पेश किया गया है और यही कारण है कि हमारे पारम्परिक बीज गुणवत्ता और शारीरिक पोषण के लिए सबसे उपयुक्त है। पारम्परिक भारतीय बीजों को संरक्षित करके आने वाली पीढ़ियो तक पहुँचाना है। ताकि स्वस्थ अनाज फल और सब्जियां का उत्पादन जारी रहे और यह काम भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 द्वारा किया जायेगा। विश्व में बीजों का निर्यात बहुत बड़ा बाजार है। इसमें भारत की हिस्सेदारी बढ रही है। भारत जैसे विशाल और कृषि प्रधान देश के लिए वैश्विक बीज बाजार में बडी हिस्सेदारी हासिल करने के लिए एक समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किया जायेगा। भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 कृषि, बागवानी, डेयरी, मत्स्य पालन सहित अन्य सभी प्रकार की सहकारी समितियों कीतरह प्रारम्भिक ऋण समिति को भी बीज उत्पादन से जोडेगी। पैक्स के माध्यम से हर किसान अपने खेत में बीज का उत्पादन कर सकेगा, इन बीजो कों प्रमाणित किया जायेगा और बाद में भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 इन बीजो को पूरे देश में ही नही बल्कि पूरी दुनियां तक पहुंचाने में योगदान देगा, आज भारत में ही बीजों की आवश्यकता लगभग 465 लाख कुंटल है, जिसमें से 165 लाख कुन्टल का उत्पादन सहकारी तंत्र के माध्यम से होता है, जिसमें सहकारी समितियों का योगदान 01 प्रतिशत से भी कम है। इस अनुपात को बदलने के लिए भारतीय बीज सहकारी समिति लि0 की स्थापना की गई है। ❑

पशु जैविक औषधि संस्थान द्वारा प्रदेश वैक्सीन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा

उत्तर प्रदेश के पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने यहां पशुपालन निदेशालय के परिसर में स्थित पशु जैविक औषधि संस्थान के पुनर्रोद्धार एवं आधुनिकीकरण कार्य का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 15 करोड रूपये की लागत की कार्य योजना से संस्थान द्वारा 31 दिसम्बर, 2024 तक गलाघोटू, बी0क्यू0, ईटीवी एवं स्वाइन फीवर वैक्सीन का उत्पादन प्रारम्भ होगा और भविष्य में प्रदेश वैक्सीन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनेगा। श्री सिंह ने कार्यक्रम में वर्चुअली रूप से प्रदेश के 37 जनपदों में 118.49 करोड़ रूपये की लागत से बनने वाले 74 वृहद गो संरक्षण केन्द्रों का भी शिलान्यास किया। जिसमें करीब 30 हजार निराश्रित गोवंश को आश्रय प्राप्त होगा। पशुधन मंत्री श्री धर्मपाल सिंह ने उ0प्र0 स्थापना दिवस के अवसर पर पशुपालन विभाग की विभिन्न योजनाओं एवं निर्माण कार्यों का शिलान्यास एवं शुभारम्भ किया।

श्री सिंह ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री प्रगतिशील पशुपालक प्रोत्साहन योजना के तहत 05 लाभार्थियों मलिहाबाद की श्रीमती खुशबू एवं पीयूष कुमार सिंह को 10 हजार रूपये, अनुपम कुमार द्विवेदी वीरेन्द्र कुमार तथा चन्द्र शेखर को 15 हजार रूपये की धनराशि बैंक खाते में डीबीटी के माध्यम से अंतरित की। उन्होंने चयनित लाभार्थियों से संवाद किया और प्रशस्ति पत्र वितरित करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया।

भारत की लोक आस्था हो रही साकार, आ रहे हैं प्रभु श्रीराम हमारे द्वार

प्रदीप कुमार गुप्ता
फीचर लेखक,
मुख्यमंत्री सूचना परिसर,
लोकभवन, लखनऊ

अयोध्या धाम में आगामी 22 जनवरी, 2024 को भगवान श्रीराम लगभग 500 वर्षों के बाद अपने स्वयं के मंदिर में विराजमान होने जा रहे हैं। ऐसे में सभी सनातन धर्मावलम्बी उत्साहित और उल्लसित हैं। पूरा देश उत्सव मना रहा है। विश्व भर की दृष्टि भारत और अयोध्या पर है। चारों ओर हर्ष और उमंग का ऐसा वातावरण है, जैसे कलयुग में त्रेता युग का आगमन हो गया हो। हो भी क्यों न, आखिर मौका ही ऐसा है। हमारे भगवान आ रहे हैं। इसी के साथ देश में राम राज्य के नए युग का सूत्रपात होने जा रहा है। प्रभु श्रीराम आ रहे हैं। हम परम सौभाग्यशाली हैं कि हमें इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने का अवसर मिल रहा है। सदियों में एक लम्हा ऐसा आता है, जो आने वाली क☞ पीढ़ियों को प्रभावित करता है। श्री राम मंदिर निर्माण और श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा ऐसा ही अवसर है, जो न जाने कितनी पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा, उनका मार्गदर्शन करता रहेगा। 'अवधपुरी सोहइ एहि भांति, प्रभुहि मिलन आई जनुराति', आज अयोध्या नगरी इस प्रकार सुशोभित हो रही है, मानो प्रभु से मिलने आई हो।

यह उत्साह, यह उमंग स्वाभाविक भी है। भारतीय संस्कृति के शिखर पर प्रभु श्रीराम विराजमान है और सदैव से इसे दिशा देते रहे हैं। इसके दृष्टिगत अयोध्या में उत्सव की शुरूआत बहुत पहले से ही हो गयी है। समूचा देश श्रीराम नाम की गूंज से गुंजायमान है, चारों ओर श्रीराम रंग से होली खेली जा रही है। सभी देशवासी दीपावली मना रहे हैं। सभी अपने-अपने तरीके, अपनी सोच और अपनी क्षमता के अनुसार श्रीराम का स्वागत करने को तत्पर और उत्सुक हैं। पूरे देश से अयोध्या धाम में श्रीराम के लिए उपहारों की बरसात हो रही है।

जो बुजुर्ग हैं, उनके जीवन का एक स्वप्न साकार होने जा रहा है। वहीं, नौजवानों को ऐसा उपहार मिलने जा रहा है, जो बेशकीमती है और जिसकी चमक आने वाली सदियों तक अनेक पीढ़ियों का पथप्रदर्शन करती रहेगी। श्रीराम मंदिर का निर्माण समकालीन इतिहास की ऐसी घटना है, जिसकी पूरे विश्व में अन्यत्र मिसाल मिलना दुर्लभ है। एक ओर जहां विश्व में अनेक देश अन्य देशों पर आधिपत्य कायम करने का प्रयास कर रहे हैं, वहीं भारत में हमारे सर्वलोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश की सबसे बड़ी समस्या का सर्वमान्य समाधान हुआ है। अयोध्या धाम में श्रीराम मंदिर का बनना कोई अचानक होने वाली घटना नहीं है। श्रीराम मंदिर के निर्माण के लिए हमारे संतो, ऋषियों, अनेक रामभक्तों ने वर्षों तपस्या की और अपना बलिदान दिया है। उनके बलिदान का प्रतिफल 22 जनवरी, 2024 को मिलने जा रहा है, जब प्रभु श्रीराम अपने स्वयं के दिव्य, भव्य एवं नव्य मन्दिर में विराजने जा रहे हैं। देश और दुनिया के कोटि-कोटि जनमानस ने इस दिन का इन्तजार किया है।

प्रधानमंत्री जी के विज़न और उनके प्रगतिशील नेतृत्व में देश समृद्धि के नए आयाम स्थापित कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के विजन को उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी साकार कर रहे है। अयोध्या भारत की सांस्.तिक, आध्यात्मिक विरासत का प्रतिनिधित्व करती है। श्री राम और अयोध्या एक दूसरे के पर्याय है। पावन सरयू नदी के किनारे बसी अयोध्या नगरी ने एक लंबे समय तक उपेक्षा झेली है। आज उसका गौरव पुनः स्थापित हो रहा है। अयोध्या को विश्व की सुन्दरतम नगरी बनाने के लिए मुख्यमंत्री जी दिन-रात एक कर चुके हैं। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार अयोध्या को विश्व की सुन्दरतम

नगरी बनाने के लिए प्राण-प्रण से जुटी है। अयोध्या के सर्वांगीण विकास के लिए 31 हजार करोड़ रूपये से अधिक की परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है। इनमें से अनेक परियोजनाएं पूर्ण हो चुकी हैं, शेष भी शीघ्र ही पूर्ण हो जाएंगी।

श्रद्धालुओं, भक्तों, आस्थावान यात्रियों और पर्यटकों की सुविधा के लिए अयोध्या नगरी को सजाया और संवारा जा रहा है। श्रीरामलला के विराजमान होने के बाद अयोध्या में पर्यटकों और श्रद्धालुओं का आगमन कई गुना बढ़ने वाला है। इसके लिए राज्य सरकार की सभी तैयारियां तीव्र गति से चल रही हैं। अयोध्या में श्रीराम पथ, भक्तिपथ, धर्मपथ, श्रीरामजन्मभूमि पथ, मल्टीलेवल पार्किंग का निर्माण हुआ है। रामजी की पैड़ी के सौन्दर्यीकरण सहित नए घाटों का निर्माण, सूरजकुण्ड एवं भरतकुण्ड का सौन्दर्यीकरण किया गया है। अयोध्या में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन लगातार हो रहा है। इससे यहां का वातावरण राममय हो गया है।

अयोध्या में इन्फ्रास्ट्रक्चर के अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। उत्तर प्रदेश का चौथा अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अयोध्या में महर्षि वाल्मीकि अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के रूप में शुरू हो गया है। इससे अयोध्या को सम्पूर्ण भारत और विश्व से कनेक्टिविटी मिलेगी। अभी यहां से अहमदाबाद, दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता तथ बेंगलुरू के लिए लाइट शुरू की गई है। अयोध्या को राज्य के विभिन्न स्थानों से हेलीकॉप्टर सेवा से भी जोड़ा जा रहा है।

अयोध्या में पुनर्विकसित रेलवे स्टेशन का उद्घाटन प्रधानमंत्री जी ने विगत दिनों किया है। इस स्टेशन का नाम मुख्यमंत्री जी की पहल पर 'अयोध्या धाम' कर दिया गया है। अयोध्या को दिल्ली तथा अन्य नगरों से 'वन्देभारत' एवं 'अमृत भारत' ट्रेनों से जोड़ा गया है। यहां प्रदूषण मुक्त तथा आरामदायक सड़क परिवहन की सुविधा के लिए इलेक्ट्रिक बसों की शुरूआत की गई है। इसी क्रम में यहां ई-ऑटो भी चलाए जा रहे हैं। अयोध्या के अन्दर तथा अयोध्या को अन्य जनपदों से जोड़ने के लिए फोरलेन कनेक्टिविटी दी गई है। श्रीरामजी के सर्वाधिक भजन गाने वाली प्रख्यात गायिका सुर साम्राज्ञी स्व0 लता मंगेशकर जी को समर्पित लता मंगेशकर चौक का निर्माण कराया गया है। यह आने वाले सभी लोगों का मन मोह लेता है।

मुख्यमंत्री जी की पहल से शुरू हुए 'दीपोत्सव' ने अयोध्या नगरी को वैश्विक पहचान दी है। यह कार्यक्रम अयोध्या की ब्राण्डिंग करने वाला इवेन्ट बन गया है। इसने प्रतिवर्ष अपना पिछला रिकॉर्ड तोड़ा है। दीपोत्सव का आयोजन सच्चे अर्थों में दीपावली को सम्पूर्णता प्रदान करता है। इससे जुड़ना परम गौरव की अनुभूति कराता है। अयोध्या को देश की पहली सोलर सिटी के रूप में भी विकसित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अयोध्या नगरी की पुरातन पहचान को बरकरार रखते हुए दिव्य, भव्य और नव्य अयोध्या के रूप में विकसित कर नई पहचान दिलाने का कार्य पूरी प्रतिबद्धता और लगन से किया है। मुख्यमंत्री जी ने प्राण प्रतिष्ठा समारोह को 'राष्ट्रीय उत्सव' की संज्ञा दी है। इसके लिए अयोध्या में विशेष स्वच्छता अभियान तथा सिंगन यूज प्लास्टिक फ्री अयोध्या कैम्पेन चलाए गए हैं। मुख्यमंत्री जी ने अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के पल को अलौकिक, अभूतपूर्व, अविस्मरणीय बनाने के लिए सभी प्रबन्ध किए हैं। ऐसा लग रहा है कि प्रभु के आगमन का समाचार सुनकर अवधपुरी सम्पूर्ण शोभा की खान हो गई है- 'अवधपुरी प्रभु आवत जानी, भई सकल शोभा कै खानी'।

श्रीराम हमारे आराध्य और पूज्य हैं। श्रीराम का जीवन सभी मायनों में विशिष्ट है। उन्हें मर्यादा पुरूषोत्तम ऐसे ही नहीं कहा गया है। जीवन के जितने भी स्वरूप है, जितने भी सम्बन्ध हैं, जितनी भी मर्यादाएं हैं, वह सभी श्रीराम के पावन चरित्र में दृष्टव्य होते हैं। वह एक आज्ञाकारी पुत्र हैं, राजा दशरथ श्रीराम के बिना रह नहीं पाते। वह अपनी सभी माताओं के स्नेह के भी पात्र हैं। श्रीराम अपनी सभी माताओं को समान रूप से स्नेह और सम्मान देते हैं। श्रीराम अपने समस्त गुरूओं के भी अत्यन्त प्रिय शिष्य हैं। गुरू की आज्ञा उनके लिए पत्थर की लकीर है। श्रीराम बहुत विनम्र बड़े भाई भी हैं। भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न जी पर उनका परम स्नेह सदैव रहता है। श्रीराम अपनी धर्मपत्नी सीता जी

का सम्मान करने वाले आदर्श पति भी हैं। माता सीता की खोज में श्रीराम वन-वन भटकते हुए अन्ततः लंका विजय करते हैं और माता सीता को सुरक्षित और सकुशल घर वापस लाने में सफल होते हैं।

श्रीराम मित्रता का साकार रूप हैं। सुग्रीव, विभीषण सहित अन्य से उनकी मित्रता आज भी हमारे लिए प्रेरणा है। वह मित्रता को प्राण-प्रण से निभाते हैं। श्रीराम की मित्रता निःस्वार्थ है। श्रीराम के मन में राज्य विस्तार की कोई लालसा नहीं है। लंका विजय के उपरान्त श्रीराम वहां का राज्य विभीषण को सौंप देते हैं। बाली के छल-कपट से पीड़ित सुग्रीव को किष्किन्धा का राज्य सौंपकर श्रीराम न्याय करते हैं। श्रीराम अपने भक्तों के प्रति बड़े दयालु हैं। श्री हनुमान जी में भक्ति का चरम दिखाई देता है। उसी प्रकार श्रीराम भी हनुमानजी को अपना परम भक्त स्वीकार करते हैं और उनसे स्नेह रखते हैं। श्रीराम शबरी के जूठे बेर बड़े चाव से खाते हैं। उनके मन में किसी भी प्रकार का ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं है।

भारत ने अनेक संस्कृतियों और सभ्यताओं को अपने में समेट रखा है। विविधताओं के बावजूद भारत एक है और यहां की संस्कृति भारतीयता से ओत प्रोत है। प्रभु श्रीराम भारतीय संस्कृति के मूल में है। उत्तर प्रदेश को इस बात का गौरव प्राप्त है कि प्रभु श्रीराम का जन्म यहां अयोध्या नगरी में हुआ। अयोध्या में ही उन्होंने अपनी बाल लीला रची और यहीं से वह माता सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ चौदह वर्षो के वनवास के लिए निकले। अनेक विघ्न बाधाओं को पार करते हुए प्रभु श्री राम अंततः अत्याचारी और अन्यायी रावण का वध कर अयोध्या नगरी लौटे और उन्होंने राम राज्य की स्थापना की। यही राम राज्य सदैव से हमारा पथ प्रदर्शक और प्रेरणा स्रोत रहा है।

अयोध्या में सभी के लिए असीम सम्भावनाओं के द्वार खुले हैं। सरकार के प्रयासों से यह नगरी आस्था के साथ ही पर्यटन की दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण गन्तव्य बन गई है। आध्यात्म, संस्कृति और पर्यटन की त्रिवेणी अयोध्या नगरी को सम्भावनाओं से भरपूर बनाती है। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर ऊर्जा का पावन स्रोत है, जो भारत के गौरव को पुनर्स्थापित कर रहा है। श्रीराम मन्दिर के निर्माण और श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा के माध्यम से भारत विश्व मानवता को यह सन्देश देने में सफल हुआ है कि समस्या कितनी भी बड़ी तथा कितनी भी गम्भीर हो, संवाद से हर समस्या का समाधान निकाला जा सकता है। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर त्याग, मर्यादा, विनम्रता तथा न्याय की प्रेरणा विश्व को देता रहेगा। यह इस बात का भी प्रतीक है कि अन्यायी, अत्याचारी चाहे कितना बड़ा, कितना भी शक्तिशाली हो, अन्ततः विजय सत्य और न्याय की ही होती है। देश की आजादी के अमृतकाल में श्रीरामलला भारत को विकसित और आत्मनिर्भर बनाने के प्रधानमंत्री जी के संकल्प की पूर्ति के लिए हमारे प्रेरणापुंज बनेंगे।

प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने अयोध्या को भव्यता प्रदान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। प्राण प्रतिष्ठा का यह अवसर हम सभी के लिए एक भावनात्मक क्षण है, यह हमारी विरासत के सम्मान का भी क्षण है, यह देश की एकता और अखण्डता को मजबूत करने तथा भारत की कीर्ति को सम्पूर्ण विश्व में फैलाने का क्षण भी है। लोक आस्था ने उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम सम्पूर्ण भारत को एक सूत्र में बांधा है। आज यही लोक आस्था अपने विराट स्वरूप में साकार होने जा रही है, प्रभु श्रीराम अपने स्वयं के मन्दिर में विराजमान होने जा रहे हैं। ❑

! जय श्रीराम !

पता : मुख्यमंत्री सूचना परिसर,
लोकभवन, लखनऊ
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग,
उत्तर प्रदेश
मो0 नं0-7705800992

विश्व हिन्दी दिवस

- हरी राम यादव फैजाबादी
भूतपूर्व सैनिक/स्वतंत्र लेखक

भाषा वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों और मनोभावों को दूसरों के सामने व्यक्त करते हैं और लोग जिससे द्वारा एक दूसरे के विचारों या मनोभावों को जान और समझ पाते हैं। पृथ्वी पर रहने वाले हर जीव - जंतु, पशु - पक्षी सब की अपनी एक भाषा होती है और सभी अपने समाज की उस भाषा को बहुत अच्छी तरह से समझते हैं और अपने समाज की भाषा को सुनकर अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त करते हैं। इसी तरह प्रकृति में जीवों में सबसे श्रेष्ठ कहीं जाने वाली मानव जाति की भी विभिन्न भाषाएं हैं जो कि अलग अलग देशों में बोली जाती हैं। उनमें से एक प्रमुख भाषा है हिन्दी।

हिन्दी भाषा, अंग्रेजी, मंदारिन और स्पेनिश के बाद दुनिया में व्यापक रूप से बोली जाने वाली भाषाओं में से एक प्रमुख भाषा है। बोलने वालों की संख्या के हिसाब से दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हमारे देश में करीब 77 प्रतिशत लोग हिन्दी बोलते, लिखते, समझते और पढ़ते हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में बोली जाने लगी है। आज जहां भी भारतीय लोग रह रहे हैं उन जगहों पर वह अपनी हिंदी भाषा को अपनाए हुए हैं। हिन्दी भाषियों के अलावा अमेरिका, आस्ट्रेलिया, रूस, कनाडा, इंग्लैंड, इटली, बेल्जियम, फ्रांस,जापान, नार्वे, स्वीडन, चौकोस्लोवाकिया, रूमानिया, चीन, पोलैण्ड, मैक्सिको, मारीशस, फिजी, गुयाना, दक्षिणी अफ्रीका सूरीनाम, कीनिया, ट्रिनीटाड - टुबैगो, बर्मा, थाईलैण्ड, नेपाल, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में लोगों द्वारा पढ़ी, लिखी और बोली जा रही है।

विश्व में हिन्दी भाषा का विकास करने और इस का प्रसार करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी सम्मेलन की शुरूआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया था तब से इस दिन को विश्व हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। 10 जनवरी 2006 को पहली बार पूर्व प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाने की घोषणा की गयी और तब से इसे वैश्विक भाषा के रूप में प्रचारित करने के लिए 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

हमारी हिन्दी भाषा इतनी सरल, समृद्ध और सक्षम है कि हमारा सारा कामकाज सुचारू रूप से हिन्दी में किया जा सकता है। इसके शब्द भंडार विस्तृत और अथाह हैं। इसमें इतनी मिठास भरी है कि सुनने वाले मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। इसमें हर संबोधन के लिए अलग अलग-अलग शब्द हैं, और एक शब्द ही नहीं अनेकों शब्द हैं। हम अपनी इच्छा के अनुसार चुन और बोल सकते हैं, जबकि विश्व की अन्य भाषाओं में ऐसा नहीं है। उदाहरण स्वरूप यदि हम अंग्रेजी की बात करें तो, अंग्रेजी भाषा में सम्बोधन के साथ आदर सूचक शब्द के लिए केवल माई डियर शब्द ही है चाहे वह आपके माता-पिता, चाचा -चाची हों या बेटा - बेटी, पत्नी हों, लेकिन हिन्दी में, आदरणीय, पूज्यनीय, श्रद्धेय, प्रिय , हृदयांश, हृदयकणिका जैसे तमाम शब्द, पद की गरिमा के अनुसार प्रयोग में लायें जाते हैं।

यह एक सोचनीय प्रश्न है की जहां दूसरे देश हिंदी भाषा को अपना रहे हैं, लिख रहे हैं, पढ़ रहे हैं, वहीं हमारे देश में यह दोयम दर्जे की बनी हुई है। अंग्रेजी बाहर से आकर रानी बनी हुई है और हमारे देश की रानी बेगानी बनी हुई है। देश के

नेतृत्व में मजबूत इच्छाशक्ति और दृढनिश्चय के अभाव के कारण आज भी देश की व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका, यहां तक कि देश की सबसे बड़ी पंचायत में भी अंग्रेजी का बोलबाला है।

हमारे देश के लोगों के दिमाग में अंग्रेजी का भूत इस कदर सवार है कि अंग्रेजी बोलने वाले को वह बहुत श्रेष्ठ समझते हैं और बढ़िया ब्याकरण सम्मत हिंदी बोलने वाले विद्वान हो कमतर आंकते हैं। यदि हम देश की न्यायपालिका की बात करें तो उसके भी कामकाज की भाषा आज भी अंग्रेजी ही है, जिस व्यक्ति का मुकदमा लड़ा जा रहा होता है, वह ही नहीं जान पाता कि दोनों पक्ष के अधिवक्ता न्यायाधीश के सामने क्या कह रहे हैं, वह बस मूक दर्शक और पेशी पर हाजिरी लगाने वाला पुतला भर होता है। मुकदमों के निर्णयों को जानने के लिए सामान्य आदमी को अनुवादक की आवश्यकता पड़ती है,तब वह जान पाता है कि क्या लिखा गया है। आजादी के इतने सालों बाद भी हमारे देश में कुछ अपवादों को छोड़कर दवाओं के नाम अंग्रेजी में ही लिखे जा रहे हैं, और अंग्रेजी भी उस तरह की कि उन नामों को केवल डाक्टर और मेडिकल स्टोर वाले ही पढ़ पाते हैं।

किसी भी स्थापित व्यवस्था को बदलने में कुछ कठिनाइयां जरूर सामने आती हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि उनका कोई समाधान न हो। इसी तरह हिन्दी में कामकाज शुरू होने पर भी कुछ कठिनाइयां होना स्वाभाविक हैं, लेकिन ऐसा नहीं कि उनका कोई समाधान नहीं है। विश्व के तमाम ऐसे देश हैं जिन्होंने अंग्रेजी को ढकेल कर अपने देश से बाहर कर दिया है और अपने देश की भाषा में हर पाठ्यक्रम को तैयार करके अपनी भाषा में विज्ञान, चिकित्सा और तकनीकी तक की शिक्षा दे रहे हैं लेकिन एक हम हैं कि अपने वोट बैंक के चक्कर में अपने देश की मातृभाषा का दिवस मनाने में खूब गर्व की अनुभूति करके फूले नहीं समाते हैं।

हमारे देश में जब तक कोट, पैंट और टाई संस्कृति जिंदा रहेगी, तब तक हमारी मातृभाषा हिंदी कभी भी राष्ट्र भाषा और जीवन में आम जन की भाषा नही बन सकती है। हमारे देश में हिंदी को अपनी राष्ट्रभाषा बनने में टाई संस्कृति सबसे बड़ी बाधा है। जिस दिन हमारे देश की कार्यालयी वेशभूषा धोती-कुर्ता, गमछा और साड़ी हो जायेगा, उस दिन हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी को माथे की विंदी बनने से कोई नहीं रोक सकता।

यदि आप अपने आसपास नजर दौड़ाएं और देखें की आजादी के बाद खुलने वाले स्कूलों में हिंदी माध्यम के कितने स्कूल खुले हैं, तो यह संख्या आप उंगलियों पर गिन सकते है। वहीं दूसरी ओर अंग्रेजी माध्यम के स्कूल बरसात में उगने वाले कुकुरमुत्ते की तरह हर गली मुहल्ले में खुलते जा रहे हैं और कार्यालयों टाई पहनकर बैठे अधिकारी धडल्ले से मान्यता प्रदान कर रहे हैं। हिंदी की दुर्दशा के पीछे हमारी सरकारों का भी हाथ कम नहीं है। आज ज्यादा वोट लेने की होड़ में, गरीब तबके का वोट हथियाने के चक्कर में देश के प्राथमिक स्कूलों में भी अंग्रेजी पढ़ायी जाने लगी है। जबकि होना यह चाहिए था कि अंग्रेजी माध्यम से खुलने वाले स्कूलों पर रोक लगाई जाए।

हमें अपनी आत्मा को जागृत करने के लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र सिंह जी की लिखी हुई पंक्तियों को याद करना होगा, अपनी आत्मा को जागृत करना होगा, अपनी जननी जन्मभूमि के दायित्व को निभाना होगा , जिससे कि विश्व हिंदी दिवस मनाने की भविष्य में आवश्यकता न पड़े और हिन्दी जन जन के माथे की विंदी बने और लोग देश विदेश में हिंदी को पढ़, लिख और बोलकर लोग गर्व की अनुभूति करें -

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को सूल।
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देसन से लै करहू, भाषा माहि प्रचार।।

पता : सतगुरू पुरम कालोनी
चरन भट्ठा रोड
निकट एस.जी.पी.जी.आई., लखनऊ
मो. -7087815074
ईमेल-**hariram1511@gmail-com**

प्लास्टिक

नमिता वैश्य (शिक्षिका)

एकल प्रयोग प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जो कि रसायनों से बना हुआ है, इसका प्रयोग प्रकृति के लिए हानिकारक है। मनुष्यों के साथ ही साथ यह पशुओं की जान के लिए भी घातक है। एकल प्रयोग प्लास्टिक से अभिप्राय है एक ऐसी प्लास्टिक जिसका उपयोग केवल एक बार ही किया जा सकता है। सामान्य भाषा में इसे डिस्पोजेबल प्लास्टिक भी कहा जाता है। एकल प्रयोग प्लास्टिक के अन्तर्गत प्लास्टिक की थैलियां, प्लास्टिक के गिलास व चम्मच, पानी की बोतलें,प्लेट्स,खाद्य पदार्थों में प्रयोग होने वाली पैकिंग प्लास्टिक सम्मिलित है। इस प्रकार की प्लास्टिक का उपयोग रिसाइकिल में भी नहीं किया जाता। प्रयोग के बाद इस प्लास्टिक को कचरे में डाल दिया जाता है।यह एक नये प्रकार का प्रदूषण है जिसे हम 'प्लास्टिक प्रदूषण' की समस्या कहते हैं। भारत में हर वर्ष लाखों टन प्लास्टिक का उत्पादन किया जा रहा है जिसके उपयोग से होने वाला पर्यावरण का नुकसान मानव तथा प्राणी के जीवन के लिए अत्यंत घातक है।

आज प्लास्टिक प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है। सामान्यतः एकल प्लास्टिक का प्रयोग करके लोग इसे फेंक देते हैं, जिसके बाद मिट्टी वाली सतह पर यह पालीथीन दब जाती है तथा नाले आदि में जाकर ये उनके प्रवाह को अवरूद्ध कर देती हैं, इससे जलजमाव की समस्या होती है। जल के साथ बहकर ये अंततः नदियों व समुद्रों में पहुंच जाते हैं, चूंकि ये प्राकृतिक रूप से विघटित नही होते इसलिए नदियों, समुद्रों आदि के जीवन व पर्यावरण को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं।

पालीथीन के उपयोग के कारण पर्यावरण में पैदा होने वाला प्रदूषण नियंत्रण करना अत्यंत कठिन है,यह समस्या सम्पूर्ण विश्व के लिए चिंता का विषय है। पालीथीन को कचरे में डालने तथा जलाने से जो धुआं निकलता है वह हवा में विषैली गैस के रूप में फैल जाता है। प्लास्टिक प्रदूषण के कारण वैश्विक स्तर पर लाखों की संख्या में पक्षियों आदि की मौत की खबरें मिलती ही हैं,ये प्रदूषण व्हेल,सील तथा कछुओं आदि की मौत का भी कारण बनते हैं। ये सभी प्लास्टिक के अंशों को निगलने के कारण काल का ग्रास बनते हैं।

'भारत के 73वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत देश को प्लास्टिक कचरे से मुक्त करने की अपील की थी। एकल प्रयोग प्लास्टिक से भारत को मुक्त करने के अभियान की शुरूआत महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर, 2019 से की गयी थी। 1जुलाई, 2022 से एकल प्रयोग प्लास्टिक से बने 19तरह के उत्पाद बैन कर दिये गये हैं। 100 माइक्रोन से कम के प्लास्टिक या पीवीसी बैनर आदि को तत्काल बैन किया गया है। साथ ही इन वस्तुओं का प्रयोग करने पर अब जुर्माना का भी प्रावधान है।

प्लास्टिक जिस प्रकार से हमारे जीवन में सम्मिलित हो चुका है, उसे देखते हुए इसे एकदम से तो जीवन से निकाला नहीं जा सकता किन्तु समझदारी भरे उपाय कर इस समस्या को एक

सीमा तक नियंत्रित अवश्य किया जा सकता है। प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन में निम्नलिखित कदम उठाये जाने आवश्यक हैं -

1-- फेंकी गयी प्लास्टिक की रिसाइक्लिंग की जानी चाहिए।

2--पैकेजिंग के काम में लाई और फेंक दी जाने वाली प्लास्टिक के उपयोग में यथासंभव कमी लानी चाहिए।

3--सामान लेने के लिए ग्राहकों को कपड़े के बैग का प्रयोग करना चाहिए।

4--किसी भी प्रकार के प्लास्टिक के पदार्थ को सीवर , नदियों के किनारे या समुद्र के आसपास नहीं फेंका जाना चाहिए।

5--प्रत्येक सदस्य को प्राकृतिक रूप से विघटित हो सकने योग्य तथा विघटित न हो सकने योग्य अलग -अलग कूड़ेदान के उपयोग के विषय में शिक्षित किया जाना चाहिए।

6--जनसाधारण में प्लास्टिक से उत्पन्न खतरों के प्रति सघन जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए, साथ ही नागरिकों में अपने शहर व देश के पर्यावरण की रक्षा के उत्तरदायित्वों का प्रचार किया जाना चाहिए।

इस प्रकार हमें प्लास्टिक के उपयोग को न्यूनतम स्तर पर लाने के लिए इसके उपयोग में कमी लाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही प्लास्टिक के सामानों के पुनः इस्तेमाल की ओर बढ़ना होगा अर्थात इन्हें कचरे में फेंकने के बजाय घरेलू कामों में हम इनका पुनरूपयोग करें। स्वच्छ भारत अभियान की कल्पना को साकार करने के लिए समझदारी तथा दूरदृष्टिपूर्ण क्रियान्वयन से ही आने वाला समय देश के लिए प्रदूषण से मुक्ति हेतु बेहतर बन सकेगा। ❑

मसकनवा, गोण्डा
उ.प्र.-271305
मो.-9997478210

पूस की बादरी

डा0 उमेश प्रकाश
(साहित्य शिरोमणि)

हांड़ कप-कंपा रही, हाथ-पांव जमा रही।
पूस की ये बादरी, ठंड नहीं भा रही।।
सूर्य को छुपा रही, चांद को गुमा रही।
यार भरी दोपहर, सांझ नजर आ रही।।
धार लिए वस्त्र ढेर, आग ताप-ताप के।
हीटर संग ब्लोअर भी, देख न लजा रही।।
हे ! प्रभु कर रहम, अब गये हैं हम सहम।
ओढ़ के रजाई सात, ठंड नहीं जा रही।।

❑❑

पता : एफ–2136, राजाजी पुरम्,
लखनऊ–226017, मो0– 9616135035

सहकारिता आंदोलन

— सीएमए गोविन्द शुक्ल

पिछले स्वतंत्रता दिवस,15 अगस्त 2023 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सहकारिता पर विशेष टिप्पणी की। क्या आवश्यकता थी, लाल किले की प्राचीर से इस विषय को उठाने की? इससे पहले वे सहकारिता को स्वतंत्र मंत्रालय बना कर उसका प्रभार अमित शाह को दे चुके हैं। गृहमंत्री के रूप में इस समय अत्यधिक व्यस्त चल रहे अमित शाह को आखिर सहकारिता मंत्रालय का प्रभार क्या दिया गया? ये ऐसे प्रश्न हैं,जिस पर न तो विपक्षी दलों का ध्यान गया, और न आम जनता के बीच चर्चा हुयी। क्योंकि यह आर्थिक रणनीति का सबसे महत्वपूर्ण रथ है,राजनीति का मोहरा नहीं है। यह संकेत है,कि सहकारिता को देश की आर्थिक व्यवस्था की धुरी बनाने का समय आ गया है। सबसे पहले यह प्रयोग कृषि क्षेत्र पर होना था,लेकिन तीन कृषि कानूनों के महा विवाद ने इसे आगे बढ़ने से रोक दिया। अब अवस्थापना क्षेत्र और उद्योग जगत में इसका प्रयोग वांछित है। हालांकि, इसे भारी उद्योग के स्थान पर लघु उद्योग और ग्रामीण उद्योग पर लागू किया जा सकता है। समस्त भूमण्डल का अनुभव है कि सहकारिता ने सफलता के झंडे फहराये हैं। हालांकि,पर्याप्त सफलता अभी भी,एक स्वप्न बनी हुयी है। इस पर बहुत काम करना बाकी है। आशाओं और संभावनाओं का रहस्य इसी सहकारिता के सिद्धांत में छिपा है।

भारत की आर्थिक स्वतंत्रता के मूल में गांवों का विकास और सहकारिता का दर्शन रहा, लेकिन आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने इसे नकार दिया। यही सबसे बड़ी भूल सिद्ध हुयी। किसी अर्थशास्त्री ने समर्थन भी किया,तो इस देश की नौकरशाही आड़े आ गयी। इस तरह,सहकारी का पहिया अपने सफलता के पथ फर दौड़ने के स्थान पर रेंगने सा लगा। कभी कभी तो यह भ्रम होता है,कि सहकारिता चल भी रही है,या उसके चलने का आडम्बर चल रहा है। गम्भीर प्रश्न है, अथवा प्रश्न में छुपी गंभीर समस्या है। जो भी हो,लेकिन इतना तय है कि सहकारिता को एक स्वतंत्र आंदोलन के रूप में नहीं जाना या समझा गया। यह सदैव सरकारी बैशाखी पर चलने वाला लंगड़ा आंदोलन भर बन गया। सरकारों ने सहकारिता को अपना आंदोलन बना डाला,जनता का आंदोलन कभी नहीं बनने दिया। इससे यह सदैव जन सामान्य के लिये सहज नहीं हो सका। जहां भी सहकारिता का शब्द या इससे संबंधित कोई बात होती, वहां इसे सरकारी रूपक मान लिया जाता रहा। दशकों से लोग ऐसा ही समझते और अनुभव करते आ रहे हैं। विडम्बना है कि जनता इस सहकारिता शब्द से ही विचलित हो जाती है। प्रायः, लोग इसकी ओर ध्यान देने से बचते हैं। यह कठिन समस्या है,कि जन मानस में इसकी विश्वशनीयता कभी स्थिर न हो सकी। और सरकारों ने इसकी विश्वशनीयता को बढ़ाने के लिये कोई प्रयास नहीं किया। देश के अर्थशास्त्रियों ने भी इस पर चिंता नहीं जताई। संस्थायें और संगठन सोते रहे। जागरूकता के नाम पर खोखले दावे होते रहे, अपनी अपनी पीठ थपथपाने की परपंरा अच्छी तरह निभाई गयी।

सहकारिता को सरकारी नियंत्रण से बाहर निकलना होगा। सहकारिता को स्वतंत्र जन आंदोलन में परिवर्तित करना चाहिए, जैसाकि मैं अपने

जागरूकता कार्यक्रम में सभी का आह्वान करता हूं। हर वर्ग, हर व्यवसाय या हर कार्यकलाप के लिये सहकारिता का आश्रय लेना उचित है। अर्थात, क्या हम अपने कार्यक्षेत्र में सहकारिता का प्रयोग कर सकते हैं, यदि कर सकते हैं-किस सीमा तक और किस तरह से कर सकते हैं? इस पर जनता और सरकार आमने सामने विचार करें। सहकारिता को धरती पर उतारा जाय। व्यक्तिगत जीवन को सहकारिता जीवन से कैसे जोड़ा जा सकता है,इस पर हर हष्टिकोण से सहमति बनायी जा सकती है। सहकारिता को आदर्श बनाये बिना, उस पर प्रगति संभव नही। मैं 'सहकारिता आंदोलन' को अपना आंदोलन मानता हूं, और इसे हर घर तक पंहुचाना चाहता हूं। क्या इसे सबको नहीं करना चाहिये, क्योंकि यह सबका है। जैसे कभी स्वतंत्रता आंदोलन सबका था, वैसे ही आज सहकारिता आंदोलन सबका है।

वाणिज्य का शोधकर्ता होने के नाते,मैं सहकारिता को बहुत निकट से परख रहा हूं। सहकारी ऋण समितियों और सहकारी आवास समितियों को छोड़ कर अभी तक सहकारिता ने कोई उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं पायी है। उत्तर प्रदेश में गन्ना किसानों और सहकारी चीनी मिलों के मध्य सरकार ने कोई सकारात्मक भूमिका नहीं निभाई,बल्कि सहकारी क्षेत्र की मिलों को कम कीमत पर बेंच दिया गया। यही हाल अन्य प्रयोगों का हुआ। सबसे बड़ी बात यह है कि जब जब सहकारिता पर अनियमितताओं का आरोप लगता है,तब तब सरकार बचाव की मुद्रा में खड़ी प्रतीत होती है। इस नीति में परिवर्तन की आवश्यकता है। सहकारिता का मतलब सरकारिता नहीं है, न ही सहकारिता कोई संरक्षित कार्यक्रम है। इसलिए, इस पर अधिकारीगण भी अपनी सोच और विचार में परिवर्तन लायें। जनता पर इसका सीधा प्रभावित पड़ेगा। लोगों को यह लगना चाहिए कि सहकारिता उनका मिशन है,जनता का आंदोलन है। सरकारें स्थायी नहीं हो सकतीं,जबकि सहकारिता कार्यक्रम स्थायी मिशन की तरह है।

सहकारिता की चेतना को जागृत नहीं किया जा सका। इसे शिक्षा का अंग भी नहीं बनाये गया। न ही इसे प्रशिक्षण व कौशल विकास से जोड़ा गया। सहकारिता की सामान्य सी जानकारी या परिचय तक अधिसंख्य लोगों को ज्ञात नहीं। यह बहुत बड़ी कमी है,या संवादहीनता का विषय है। यद्यपि, इसके लिये सरकार ने बजे की व्यवस्था कर रखी होगी, फिरभी इसका कोई प्रभाव जनमानस में नहीं है। सहकारी ऋण समितियों के अतिरिक्त जन सामान्य में सहकारिता के प्रति नकारात्मक भाव पहले से विद्यमान है, इसके अनेक कारण हो सकते हैं। सबसे बड़ा कारण यही है कि एक पढ़े लिखे युवा को भी सहकारिता के लिये संवेदनशीलता नहीं है। बेरोजगार नवयुवकों को सहकारिता के सिद्धांत ज्ञात नहीं। उनके लिये यह एक अनबूझ पहेली बन कर रह गयी है। बार बार यही प्रश्न उठता है कि सहकारिता को संबल कैसे प्रदान किया जाय। सहकारिता अपने पथ पर कैसे आगे बढ़ सकती है,गतिवान हो सकती है।

सहकारिता कोई व्यक्ति विशेष या वर्ग विशेष का आंदोलन नहीं है। यह जन जन का आंदोलन है। इसे खेतोलाई से लेकर कारखानों तक लागू किया जा सकता है। कानपुर एक समय में उद्योगों का हब था,इसकी तुलना इंग्लैण्ड के मैनचेस्टर से की जाती थी। अब यही शहर कल कारखानों,मिलों या उद्यमों की कब्रगाह बन चुका है। कोई देखे कि यह महानगरी वीरान व उजाड़ क्यों हुयी? जन चेतना का अभाव रहा, आज भी है। समस्त पुरानी मिल और कारखाने सहकारिता के बल पर चलाये जा सकते हैं। ऐसा प्रस्ताव स्थानीय प्रशासन को केंद्र सरकार के पास भेजना चाहिए। कानपुर को सहकारिता नया जीवन दे सकती है, बशर्ते इससे मध्यस्थों व बिचौलियों को हटा दिया जाय। कानपुर को फिर से मैनचेस्टर बनाया जा सकता है। ऐसा प्रयोग अन्य शहरों में भी हो सकता है,जहां उद्योग बीमार हो चले हैं। रूग्ण औद्योगिक क्षेत्रों को जीवन

दिया जा सकता है। सहकारिता की यात्रा औद्योगिक विकास से होकर निकलनी चाहिए। अभी तक शिक्षा और स्वास्थ्य में सहकारिता का माडल क्यों नहीं प्रस्तुत किया जा सका,यह ज्वलंत प्रश्न है। जबकि निजीकरण और पीपीपी माडल को आगे बढ़ाया गया, लेकिन सहकारिता माडल को पीछे ढ़केला गया। आउटसोर्सिंग और एचआर कंपनियां मानव संसाधन का मुख्य स्रोत बन चुकी हैं,तब सहकारिता का उपाय अलग अलग कार्यों के लिये क्यों नहीं प्रयुक्त हो सकता है। सहकारिता की बात तो सब करेंगें, लेकिन उसे गंभीरता से वे कभी नहीं मानेंगे। सहकारिता के सिद्धांत केवल कागजों पर शोभा बढ़ा रहे हैं,व्यवहार में इन्हें कोई स्वीकार नहीं करता।

सहकारिता आंदोलन कभी जन आंदोलन नहीं बन सका,या उसे जन आंदोलन बनने ही नहीं दिया गया। नेतागण व अधिकारीगण खूब सपने दिखाते रहे,फिरभी सहकारिता पग पग घिसटती रही,रोती रही,चिल्लाती रही। अन्य देशो ने सहकारिता से लाभ उठाया, प्रगति की। लेकिन भारत इसे कभी गले नहीं लगा पाया। अब वर्तमान केंद्रीय नेतृत्व ने सुध ली है। भारत सहकारिता मंत्री के रूप में अमित शाह अवश्य सहकारिता के सिद्धांतों को लागू करने का साहस दिखा सकते हैं। हालांकि,राज्यों द्वारा सकारात्मक सहयोग या योगदान की आशा क्षीण दिखाई देती है। प्रधानमंत्री सक्रिय हैं, यह अत्यंत उत्साहवर्धक स्थिति है। देश की जनता सहकारिता का स्वाद चखना चाहती है, जो अर्थशास्त्रियों ने कभी उन्हें लुभाये थे। संसार में कौन व्यक्ति या संगठन् ऐसा है जो आर्थिक लाभ के लिये नहीं सोचता है, अर्थात सभी लाभ अर्जित करना चाहते हैं। सो, सहकारिता में सबको लाभ देने की शक्ति विद्यमान है। ❑

(लेखक सीएसजेएमयू,कानपुर के शोधछात्र और आल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन,नई दिल्ली के सदस्य हैं।)

पता : 1/53, विनयखण्ड गोमतीनगर,
लखनऊ-226010

उन्नत एवं नवीन तकनीकों के अभिनव प्रयोग से कृषकों को सिंचाई की सुविधा का दिया जा रहा है लाभ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी के कुशल मार्गदर्शन तथा जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह के नेतृत्व में सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग में लगातार नवाचारों को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रदेश में स्थापित राजकीय नलकूपों एवं लघु डाल नहरों के संचालन एवं अनुश्रवण हेतु उन्नत एवं नवीन तकनीकों का अभिनव प्रयोग करके कृषकों को सिंचाई सुविधा का लाभ दिया जा रहा है। इसी क्रम में जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह की अध्यक्षता में कैनाल कालोनी स्थित सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग के मुख्यालय में बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें सिंचाई विभाग (यांत्रिक संगठन) द्वारा प्रदेश में स्थापित राजकीय नलकूपों एवं लघु डाल नहरों के संचालन एवं अनुश्रवण हेतु उन्नत एवं नवीन तकनीकों के अभिनव प्रयोग यथा. जी.एस.एम. आधारित केन्द्रीयकृत कन्ट्रोल सिस्टम, सौर ऊर्जा संचालित राजकीय नलकूप, रिचार्ज वेल तथा सेल्फ प्राइमिंग पम्प स्थापित किए जाने के अभिनव प्रयोग के संबंध में प्रस्तुतिकरण किया गया।

जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने बताया कि सिंचाई विभाग (यांत्रिक) द्वारा जनपद लखनऊ एवं बाराबंकी के 10 अदद् राजकीय नलकूपों पर जी.एस.एम. आधारित कन्ट्रोल पैनल स्थापित करके मुख्यालय पर केन्द्रीयकृत कन्ट्रोल सिस्टम द्वारा राजकीय नलकूपों के अनुश्रवण किये जाने का अभिनव प्रयोग किया गया है। भविष्य में फेज वाइस प्रदेश के लगभग 35000 राजकीय नलकूपों, 254 लघु डाल नहरों एवं 30 वृहद व मध्यम पम्प नहरों के सुगम संचालन एवं अनुश्रवण हेतु जी.एस.एम. आधारित केन्द्रीयकृत कन्ट्रोल सिस्टम स्थापित किया जायेगा। ●

आंगन

– अयोध्या प्रसाद

दादी-बाबा का बनवाया हुआ
यहां एक आंगन था।
.....बड़ा सा आंगन !
दस-बारह चारपाइयां
बिछाने भर का आंगन !
तीस चालीस लोगों के
बैठने भर का आंगन !
शादी ब्याह में
माड़व छाने भर का आंगन !
आस पड़ोस के घरों में
जगह कम होने पर
छोटे मोटे आयोजन के लिए
कार्यक्रमों भर का आंगन !
होली में हुड़दंग मचाने,
दीवाली में रंगोली और
दीयों को सजाने भर का आंगन !
घर में बच्चे के जन्म पर
गोबर से लीपकर
गवनही भर का आंगन !
जाड़े में धूप सेंकने और
बरसात में नाच और लोटकर
बच्चों के नहाने का आंगन !
छोटी मोटी दावत में
टाट पर बैठकर
भोजन करने भर का आंगन !
.....था !
....अब नहीं है।
भाइयों के बंटवारे ने निगल लिया
वह बहुउद्देशीय आंगन।
अब, केवल
यादों के फाहे में संरक्षित है।
.....वह बड़ा सा आंगन !

❑

पता : म0नं0–551घ/506, नन्दनगर,
(निकट जय प्रकाश नगर) आलमबाग,
लखनऊ–226005
मो0– 8318926738

गाय : एक दृष्टि से

- गौरी शंकर वैश्य विनम्र
पूर्व सीनियर पोस्ट मास्टर,
डाक विभाग

इस्लाम एक इब्राहीमी पंथ है जो एकेश्वरवादी है। इसका प्रादुर्भाव 7 वीं शताब्दी में अरबी प्रायद्वीप में हुआ। इस्लामी परंपरा के अनुसार इस संप्रदाय का सबसे प्राचीन और पवित्र धार्मिक ग्रंथ 'कुरान' है। इसके अनुयायियों का विश्वास है कि 'वेदों' के ही समान इसके सारे अवतरण किसी के द्वारा लिखित नहीं अपितु श्रुत हैं।

कुरान का प्रथम अध्याय 'सूर - ए - फातिहा' के बाद ही 'सूर - ए - बकर' है। इसका हिंदी अनुवाद 'जवान गायों का अध्याय' है। इस अध्याय में गौ के विषय पर विचार किया गया है।

कुरान के पहले समस्त अरब, तुर्की, मिश्र तथा अन्य मुसलमानी प्रदेश मूर्तिपूजक थे। वहाँ गौ की पूजा विधिपूर्वक होती थी। मिश्र के पिरामिड पर बैल की मूर्ति अंकित है तथा प्राचीन सिक्कों पर भी बैल की मूर्ति है। तात्पर्य यह है कि बछड़े और बैल मिश्र के राष्ट्रीय शुभ चिह्नों के प्रतीक थे। इस्लाम शब्द का अर्थ है 'किसी को दुःख न देना'। कुरान कहता है कि 'दया' धर्म का मूल है। ई 0 एच 0पामर ने कुरान का अँग्रेजी में अनुवाद किया है, उसके अनुसार उन्होंने निम्न तथ्य प्रस्तुत किए हैं -

-बैल के सींग पर पृथ्वी है।

-गाय का जूठा पानी पवित्र माना जाता है

- खुदा ने पशुओं को तुम्हारा बोझा ढोने के लिए उत्पन्न किया है, भोजन के लिए नहीं। भोजन के लिए विभिन्न अनाज, फल, तरकारियाँ आदि उत्पन्न किए जाते हैं।

-आदम और हव्वा जब स्वर्ग से निकाले गए तो उनको एक मुट्ठी गेहूँ और एक जोड़ी बैल मिले। - जो बैल को काटता है, वह उस आदमी की तरह है, जो मनुष्य को मारता है।

-खुदा उसी पर दया दिखाते हैं जो उनके बनाए पशुओं पर दया दिखाता है।

अब्दुल रहमान (मौलाना फारूकी) ने अपनी पुस्तक 'वरकत और हरकत' में हजरत मुहम्मद के आदर्श वचन संकलित किए हैं। उसके अनुसार फारूकी लिखते हैं कि 'अच्छी तरह से पली हुई 90 गायों से सोलह वर्षों में केवल 450 गाएँ ही नहीं उत्पन्न होतीं, अपितु हजारों रूपयों की दूध - खाद भी मिलते हैं। अतः गाय धन की रानी है।' हजरत के दामाद अली और मुस्लिम संत को गोसी-ए-आजम की गाय के लिए इतना सम्मान था कि उन्होंने अपने जीवन में कभी गोमांस छुआ तक नहीं। यूनानी दवा की पुस्तकों में लिखा है कि 'गाय का मांस बड़ा कड़ा होता है। वह जल्दी नहीं पचता। इससे उन्माद, पिठिया, घाव और कुष्ठ रोग जैसी बीमारियाँ हो जाती हैं।' हजरत उस्मान प्रथम हदीस साइस्ता में लिखते हैं कि 'गोश्त न खाओ। इसकी आदत शराब के समान हानिकारक है।'

मुसलमानी देशों में, जहाँ सब मुसलमान बसते हैं, गाय के प्रति सदैव सम्मान का भाव रहा है। 1910 ई0 में मिश्र सरकार ने आदेश निकाला था कि 'कोई आदमी बकरीद के त्योहार पर एक भेड़ से अधिक किसी पशु का वध नहीं कर सकता।' मध्य पूर्व एशिया में गो - हत्या प्रचलित नहीं है। ईरान के बादशाह नौशेरवाँ के प्रधान मंत्री ने कहा था कि भारत में गाय की प्रतिष्ठा चंद्रमा और राजा के बराबर है। सन 1911 में अमीर हिंदुस्थान आए थे। दिल्ली के मुसलमानों ने उनके स्वागत में ईद के अवसर पर गाय मारना चाहा था तो अमीर ने बिगड़ते हुए कहा कि 'यदि गोवध करोगे तो हम

वापस चले जाएंगे।'

मुस्लिम धर्म के संस्थापक स्वयं मुहम्मद साहब ने गायों को 'पशुओं का सरदार' बतलाया है और उसका सम्मान करने की आज्ञा दी है। उन्होंने स्वयं कभी गाय की बलि नहीं दी और न आजतक कभी मक्का शरीफ में गोवध होता है। फिर भी भारत के कुछ अदूरदर्शी मुसलमान, जिस प्रेरणा से गाय के प्रेम को तिलांजलि देकर विष ग्रहण करते हैं, उसे धार्मिक प्रेरणा कैसे कहा जा सकता है? विचारशील मुस्लिम विद्वानों ने गोवध बंद करने के लिए कई बार (फतवा) व्यवस्था भी दिया परंतु उसके प्रचार में न हिंदुओं ने साथ दिया और न मुसलमानों ने।

'सुरात-ए-हज' में लिखा है कि खुदा तुम्हारी कुर्बानी में जानवर का मांस या रक्त नहीं चाहता। वह केवल तुम्हारी पवित्रता चाहता है। 'डा0 सुलेमान लखी के अनुसार - पहले बकरीद के अवसर पर धूप-दीप देने की प्रथा थी। पीछे नैवेद्य आदि। फिर पक्षी आदि का बलिदान। इसके बाद भेड़-बकरे के रूप में यह प्रथा चली, जो आगे चलकर वर्तमान गोवध जैसी बर्बर प्रथा के रूप में परिणत हो गई। डा0 लीथर ने सन 1892 में 'एशियाटिक रिव्यू' पत्र में लिखा था - बकरे का हिंदुस्थानी नाम बकरा है। यह छोटी काफ है। यदि छोटी काफ है तो बकरा मारना हुआ। यदि बड़ी काफ है तो उसका अर्थ गाय हुआ। अरब में पहले ऊँट की बलि दी जाती थी। जब उनकी संख्या घटने लगी तब वहाँ वालों ने ऊँट मारना बंद कर दिया।

जब पहले-पहल मुसलमान भारत आए तो वे हिंदुओं की गोभक्ति देखकर आश्चर्य करते थे। जब सिकंदर ने भारत पर चढ़ाई की तब राजा पुरू द्वारा मानमर्दन होने पर इस देश से लौट गया और अपने साथ विशिष्ट जाति की एक लाख गौएँ लेता गया। इसी प्रकार जब पृथ्वीराज दिल्ली के सम्राट थे तब मोहम्मद गोरी ने दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। उसको देशद्रोही जयचंद ने ही वैमनस्यवश आक्रमण हेतु आमंत्रित किया था। मोहम्मद गोरी ग्यारह बार पराजित हुआ और प्राण-भिक्षा की याचना पर महाराज द्वारा छोड़ दिया गया। कहते हैं कि बारहवीं बार जयचंद के बताए तरीके से बारह सौ गाएँ सम्मुख लेकर लड़ने आ गया। इससे महाराज के तीर रूक गए और पराजय गले पड़ गई।

मुसलमान शासकों ने हिंदुओं के भावों का आदर करते हुए गोवध पर प्रतिबंध लगा दिया था। इतिहासकार हंटर के अनुसार - प्रारंभ में मुसलमान शासकों ने गोवध पर एक प्रकार का विशेष कर 'जजारी' लगा दिया था और जो बारह 'जेटल' तक कसाइयों से वसूल किया जाता था। यह कर दो सौ वर्षों तक जारी रहा और फिरोजशाह तुगलक के शासनकाल में कसाइयों के उपद्रव मचाने पर उठा दिया गया। मोहम्मद तुगलक के समय में गाय का मांस शाही बबरची खाने में नहीं जा सकता था। बर्नियर आदि विदेशी यात्रियों ने लिखा है कि उस समय गोवध मनुष्य-वध के समान दण्डनीय था तथा तत्कालीन मुगलों की भोज्य - सामग्री में गो - मांस की चर्चा नहीं है।

भारत का प्रथम मुगल शासक बाबर हुआ। मरने के समय उसने अपने पुत्र हुमायूँ के नाम एक पत्र लिखा था। इसमें उसने लिखा था कि 'प्रत्येक धर्म के नियम के अनुसार उसके साथ न्याय करना और विशेषकर गो - हत्या न करना, क्योंकि ऐसा करके ही तुम भारतवासियों के हृदय पर विजय पा सकोगे।' हुमायूँ ने अपने पिता के उपदेश का अक्षरशः पालन किया।

एक बार हुमायूँ ईरान जा रहा था। रास्ते में उनके सौतेले भाई कामरान और माँ रायकी बेगम का पड़ाव पड़ा। वहाँ भोजन करते समय भोजन में साग-तरकारी के साथ कुछ मांस के पदार्थ थे। खाने के पहले उसे संदेह हुआ कि गोमांस हो सकता है। पूछने पर पता चला कि गोमांस ही है तो कामरान को बहुत फटकारा 'अपनी पवित्र माँ को तू गोमांस खिलाता है। क्या तू चार बकरियाँ लेने में असमर्थ हो गया' और उसने वहाँ खाना नहीं खाया।

हुमायूँ का पुत्र अकबर भी हिंदुओं की भावना का बड़ा सम्मान करता था। वह गौ को पवित्र पशु

मानता था। तत्कालीन लेखक अबुल फजल ने अपने ग्रंथ 'आईन-ए - अकबरी' में लिखा है कि 'भारत में गाय माँगलिक समझी जाती है। गोमांस निषिद्ध और उसे छूना पाप समझा जाता है।' अकबर की एक गोशाला थी। वह वैष्णव था। अकबर ने अपने नवरत्न कवि नरहरि के सुझाव पर उसने आदेश जारी किया 'मनुष्यों के जीवन का आधार एक गाय -जाति ही है, अतः हमारे राज्य में गोहत्या की रस्म बिलकुल न रहे। जो इस आदेश का उल्लंघन करेगा। उसके हाथ और पाँव की अँगुलियाँ काट ली जाएँगी।' इस आदेश से गो - हत्या बंद हो गई थी। अकबर ने गोस्वामी श्रीविट्ठलनाथजी को बहुत - सी भूमि और गाँव दिए थे, जहाँ उनकी गायों को चरने की सुविधा थी। उनके स्थानों के आसपास मोर आदि पक्षियों के शिकार पर भी प्रतिबंध था।

इस आदेश को अकबर के पुत्र जहाँगीर ने भी जारी रखा। यह प्रथा उसके पुत्र शाहजहाँ के समय भी चलती रही। औरंगजेब के समय में भी यह प्रथा उठाने का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है। बहादुरशाह के शासन में भी व्यवस्था दी गई थी कि 'मेरे अधीन समस्त राज्य में गोहत्या की रस्म बिलकुल न रहे। यदि किसी ने इसके विरूद्ध किया तो वह बादशाही कोप का भाजन बनेगा।'

मौलवी हैदरअली के पास अमृतमहाल जाति के साठ हजार बैल थे। उसकी गोशाला का प्रबंध उसका पुत्र टीपू सुल्तान करता था।

मुसलमानी शासन के अंत होने के बाद उसके विद्वानों ने गाय के संबंध में, जो समय-समय पर मत प्रकट किए हैं, उनमें से कुछ बहुत महत्वपूर्ण हैं -

1-गाय की कुर्बानी करना इस्लाम - धर्म का नियम नहीं है। (हुमायूनी भाग पृष्ठ 360)

2-बकरे और भेड़ की कुर्बानी गाय की कुर्बानी से अच्छी है। (दार - उल मुखतियार भाग पृष्ठ 228)

3-न तो कुरान और न अरब की प्रथा ही गाय की कुर्बानी का समर्थन करती है। (हकीम अजमल खाँ)

4-मुसलमान गाय नहीं मारे, यह हदीस के विरूद्ध काम है। (मौलाना हयात साहब)

5-गाय की कुर्बानी मुसलमानी धर्म का नियम नहीं। (मियाँ छोटानी)

6-मियाँ पोर मोटा साहब मांगरोल निवासी मुसलमानों के धर्मगुरू थे। उन्होंने अपनी गद्दी छोड़ दी और जीवनभर गोरक्षा का काम करते रहे।

7-सहारनपुर के मुहम्मद उस्मान ने 'गावकशी और इस्लाम' नामक पुस्तक में कुरान शरीफ का अवतरण देकर गोवध के निषेध की पुष्टि की है।

मुसलमानों में अनेक ऐसे कवि भी हुए हैं जिन्होंने मुक्त हृदय से गोरक्षा का समर्थन किया है। इनमें रहीम, जायसी, कबीर के नाम उल्लेखनीय हैं।

कबीर ने कहा है -

मांस-मांस सब एक है, जस खस्सी तस गाय।

उन्होंने गोहत्या के लिए मुसलमानों को खूब फटकारा है -

दिनभर रोजा राखते, रात हनत हैं गाय।
एक खून एक बंदगी, कैसे खुशी खुदाय।

कविवर अकबर का निम्न पद गोरक्षा का समर्थन करता है -

बेहतर यही है कि फेर ले आँखों को गाय से।
क्या फायदा है रोज की इस हाय हाय से।
कमजोरियों को रोग दें जोरों को क्या कहें?
मुस्लिम हटें तो फौज के गोरों से क्या करें?
मुँह बंद हो सकेगा मुसलमां शरीफ का।
चस्का मगर न जाएगा साहब से 'बीफ' का।

सारांशतः स्पष्ट है कि गाय की कुर्बानी मुसलमानों की मजहबी प्रथा नहीं है, अपितु उनके संप्रदाय में गाय का सम्मान करने की आज्ञा है और गोमांस भक्षण की निंदा की गई है। हमारे देश में मुसलमानों द्वारा गोवध, गोमांस भक्षण और गोमांस बिक्री का चलन अँग्रेजों और यहूदियों की देखा-देखी बढ़ा है, क्योंकि ईसाई और रोमन लोग ही इसका व्यवहार करते थे। आज हमारे देश में बकरे और भेड़ के स्थान पर गाय की बलि देना दुर्भाग्यपूर्ण है।

हमारे यहाँ मुसलमानों द्वारा हदीस और कुरान का सरेआम अनादर होता है, जबकि ईरान जैसे

देशों ने मुस्लिम सिद्धांतों को ध्यान में रखकर गोहत्या पर संपूर्ण प्रतिबंध रख दिया है। इसके विरूद्ध जो कुछ हमारे देश में हो रहा है, वह हिंदू-मुस्लिम विरोध चालू रखने के लिए ही होता है। हमारे यहाँ यदि सच्चे मुसलमान कुरान, विद्वानों और संतों के विचारों और आज्ञाओं का पालन करें तो हिंदू-मुस्लिम में प्रेमभावना सुदृढ़ रूप से स्थापित हो सकती है। हिंदू-मुसलमान मिलकर ही भारत से गोवंश की सुरक्षा करके सुख-समृद्धि की स्थापना कर सकते हैं। मुसलमानों को चाहिए कि वे पैगंबर इस्लाम, जिन्होंने गाय की कुर्बानी को अनावश्यक और हमेशा अपने धर्म-विरूद्ध माना, की आज्ञा और भावना का सम्मान करते हुए गोवध प्रथा बिल्कुल बंद करें तथा गोवंश एवं सनातन संस्कृति की रक्षा में पूर्ण योगदान करें। ❑❑

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585

आदित्य एल - 1 यान

- गौरी शंकर वैश्य विनम्र

जय भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान।
किया सूर्य को नमस्कार है
आदित्य एल-1 यान महान।
अंतरिक्ष विज्ञान में हमको
मिल गई सफलता और एक।
देश को गर्व अनुभूति हुई
शुभ अवसर पर उपलब्धि नेक।
भारत का पहला सूर्य मिशन
सौर का अध्ययन लिया ठान।
श्इसरोश ने कर दी सुस्थापित
पहली अंतरिक्ष वेधशाला।
कक्षा, लैंग्रेज विंदु बना
वैज्ञानिक गतिविधियों वाला।
हो गया सफल पहला प्रयास
जग में भारत का बढ़ा मान।
अब पंद्रह लाख किलोमीटर
पृथ्वी से एल-1 की दूरी।
खोलेगा सूर्य-रहस्यों को
आदित्य-साधना है पूरी।
होते विस्फोट सूर्य पर जो
उनके अध्ययन से मिले ज्ञान।

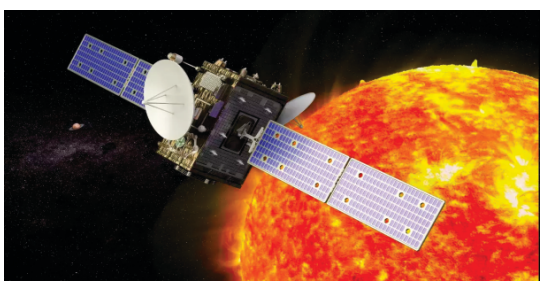

कैसा है सौर वायुमण्डल
सौर कंपन क्यों होते रहते।
प्लाज्मा, सौर ऊर्जा विषयक
'पेलोड सात' सच ही कहते।
चौदह सौ चालिस तस्वीरें
प्रतिदिन भेजेगा सूर्य यान।
हो रहा आत्मनिर्भर भारत
अंतरिक्ष तकनीक स्वदेशी है।
सांस्कृतिक अनोखा देश जहाँ
विज्ञान-ज्ञान उन्मेषी है।
नमनीय समर्पित विज्ञानी
जो सूर्य-चंद्र पर रखें ध्यान।
जय भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान।

❑❑❑

पशुओं की प्राकृतिक चिकित्सा

रामफेर
पुस्तकालयाध्यक्ष,
केन्द्रीय पुस्तकालय, पशुपालन विभाग

जोड़ों और कमर का दर्द- रोगी पशु को कुछ देर तक धूप में अवश्य ही टहलाइए साथ ही व्यायाम करवाइए। सप्ताह में एक या दो दिन उसे उपवास भी रखवाइए। मुसब्बर रस उसे मल निष्कासन के लिए क्लोरोफिल के साथ दीजिए। इसके साथ ही लहसुन भी खिलाइए सिरका पीने के पानी में डालकर पिलाइए और मधुमक्खी उत्पाद मोम दीजिए। दर्द को दूर करने के लिए केल्प हड्डी का चूरा और आयोडीन दीजिए। ये पाचक इन्जाइम है। सार्क के कोमल हड्डी का कैप्सूल 11 पौण्ड वजन के हिसाब से एक कैप्सूल रोज दीजिए। यह इस रोग में आश्चर्यजनक प्रभाव करता है। मशरूम कुछ केस में अधिक काम करता है।

जलना या झुलसना - ऐलोवेरा का रस या जेली पशु के जलने पर आम दवा के रूप मे प्रयोग की जाती है। इसे रायलजेली क्लोरोफिल या बिटामिन ई के साथ मिलाकर जले पर पानी का आघात देने के बाद देना चाहिए। सीरका अण्डी का तेल बेकिंग सोडा और पानी को नींबू के रस में मिलाकर प्याज के एक टुकड़े पर नमक लगाकर पट्टी बॉधना या लेप लगाना चाहिए। पशु के जले हुए स्थान पर सेब का सिरका 10-10 मिनट पर लगाना चाहिए। इसके बाद शहद घाव पर लगा देना चाहिए। पशु को तब तक यह दवा बॉधते रहना चाहिए जब तक उसे दर्द से छुटकारा न मिल जाए। शहद में मिटामिन व अन्य मलाई व कच्चे आलू को कुचलकर जले वाले स्थान पर लेप करने से फायदा मिलता है।

कैंसर और ट्यूमर्स- पशु के शरीर से विशाक्त दवाओं को निकालने की प्रक्रिया को पहले प्राकृतिक चिकित्सा में अपनाया जाता है। वीट गाजर सेलरी का रस या अंगूर काली बेर या करॉट का जूस रोगी के लीवर की सफाई करने के लिए देना चाहिए। इसके अलावा विसाक्त तत्वों को निकालने की दवा है। एलोवेरा या मुसब्बर का रस जिसे क्लोरोफिल के

साथ देना चाहिए। लहसुन प्याज या साइडर का सिरका पानी के साथ पिलना चाहिए। इसमें पोषण तत्व भी पाया जाता है केल्प आयोडीन थायरायड ग्रन्थि को संतुलित करता है। तथा स्तन के विशाक्त फोड़ा ट्यूमर के लिए बहुत उपयोगी होती है। पाचक इन्जाइम का भी इसके लिए प्रयोग कीजिए। सार्क मछली का कारटिजेल देना कैन्सर रोग में काफी उपयोगी होता है। इसका एक कैप्सूल प्रती 11 पौण्ड वजन के अनुपात में प्रतिदिन रोगी पशु को देनी चाहिए।

ऑखों का कैट्राक्टस- इक्यूलिप्टस शहद को एक बूँद दिन में दो बार डालने पर पशु को इस रोग से छुटकारा मिल जाता है। लेकिन इसका प्रयोग कई हफ्तों तक करना चाहिए। कच्चे खीरे का रस दिन में दो बार ऑख में डालने या काली चाय की कुछ बूँदें ऑखों में डालना या एक बूँद शहद डालना फायदेमन्द होता है। पर यह दवा कई हफतों जारी रखना चाहिए। शुद्ध साफ रेडी का तेल ऑखों में डालना कैक्टक्ट को दूर कर दूता है। ऑख की दवा के रूप में मुसब्बर का रस भी कैक्टस प्रयोग में आप ला सकते हैं। इस अवधि में भी रोगी को एनिमा देते रहना चाहिए।

कोष्ठबद्धता - पशु या व्यक्ति को कुछ उपवास कराइए और रोज ऐनिमा दीजिये। तरल क्लोरोफिल के साथ मुसब्बर का रस देना होगा ऐसे रोगी के लिए पाचक इन्जाइम देना ठीक रहता है। और बढ़ती उम्र के पशु के लिए यह अधिक आवश्यक है और रोगी पशु को पानी अधिक देना चाहिए।

खॉसी - अगर पशु को किसी प्रकार के रोग का संक्रमण हो या बुखार हो तो उसे एनिमा देकर उपवास करना चाहिए। इस प्रकार रोग से संक्रमण पशु पहले ही खाना खाना छोड़ चुके होते हैं और यही रोग दूर करने में सकारात्मक कदम होता है। उपवास में शहद या शहद उत्पाद मोम दीजिए लहसुन एण्टीसेफिटक होता है। इसलिए इसे भी देते रहे। लहसुन को पीसकर उसकी लुगदी को 1/2 चम्मच शुद्ध पानी में मिलाकर दे और आधा चम्मच इमली की चटनी के साथ आधे घण्टे के बाद उसे मिलाकर फिर दे और पॉच मिनट तक पशु को खडा रहने दें। दस मिनट तक नींबू को उबालकर और इसे पानी में निचाड दें एक औंस ग्लिसरीन में उसे मिला दीजिए। पूरा गिलास शहद से भर दीजिए। अगर नींबू न मिले तो सेब के सिरके से सेंक दीजिए। अण्डी का तेल इक्यूलिप्टस का तेल सिर के लिए स्थान पर इसके प्रयोग के लिए।

मधुमेह - पशु को प्राकृतिक चिकित्सा पशु को कुछ दिन उपवास कराने के साथ शुरू करें। लेकिन सम्पूर्ण विधि के विशेषज्ञ पशु चिकित्सक की देखरेख में ही सम्पूर्ण चिकित्सा कराएं। इसके बाद उपयुक्त मात्रा मे पशु को पर्याप्त खाना दें। सफाई के लिए अधिक मात्रा में लहसुन पशु को दें। यह रक्त को संतुलित करता है तथा एण्टीसेफिटक का काम भी करता है। इसे दिन में तीन बार दे सकते हैं। इस अवधि में बकरी का दूध केल्प सेवार या समुद्री घास का भस्म पशु को पर्याप्त मात्रा में आयोडीन शक्ति संचय के लिए दें।

अतिसार - रोगी पशु को स्वाभाविक रूप से शरीर के विसाक्त तत्वों से सफाई होने में उसे कुछ दिन उसे उपवास रखकर मदद करें। ऐसी स्थिति में पानी। तरल पदार्थ हमेशा उसे देते रहे। ताकि शरीर में आवश्यक तत्वों की कमी न होने पाएं। इसके एक चम्मच सेव का सिरका अवश्य ही दें। इमली का भी रस उसे दें उबले हुए सब्जी साग चावल मॉस का रस पशु को दे सकते हैं। इस रस में भी लहसुन पीस कर मिला दें। इसमें शहद नींबू का रस लहसुन की चटनी मिलाकर दें। इसके साथ ही सेव या शहद भी दे सकते हैं।

पशु कुत्ते या बिल्लियों के शरीर से दुर्गन्ध आने पर- इस समय पशु को एनिमा या हल्का दस्ता पर दवा देकर पशु को कुछ दिन के लिए उपवास करवाना चाहिए। इसके बाद उसे पूरा आहार दें। मुसब्बर का रस देकर उसके शरीर के विसक्त तत्वों को दूर कीजिए साथ ही क्लोरोफिल तरल भी प्रतिदिन उपवास में और उपवास के बाद भी देना

होगा। सेब का सिरका पानी के साथ उसे पिलाते रहें। लहसुन और केल्प संवार या समुद्री घास का भश्म उसे अवश्य ही दें। यह एण्टी बायोटिक्स का काम भी करता है। इसके साथ ही आयोडीन की पूर्ति करता है पूरा आहार जब पशु खाने लगे तो उसे आवश्यक पाचक इन्जाइम भी अवश्य दें। दही पेट को और कच्चा गाजर लीवर को संतुलित करता है। इन फलों को काट कर पशु को देने से हल्का दस्तकवर का काम भी करता है। पशु के बर्तन में खाना आधा घण्टा ही छोड़कर हटा दें। पशु के उपवास ओर साफ सफाई का विशेश ध्यान दें।

कान का संक्रमण- इस अवधि में कुछ दिन पशु को उपवास कराना चाहिए। जिससे शरीर की साफ-सफाई हो सके। उपवास की स्थिति में पानी और तरल पदार्थ देते रहना चाहिए। सेब का सिरका पानी में भिगोकर कान में लगाना चाहिए। हाइटोजन पैरासाइड या हेजेल का प्रयोग उस स्थान पर करें अनित्राफ्रैजर बेटाडाइन को पानी में मिलाकर इसके रंग हल्के पाय की कर देती है। सिरका मिलाकर रूई का गोल-गोल सोआव बनाकर उसमें डुबोते हैं। पशु की नियमित सफाई करते रहें। आई ड्राप से रूई को पशु के कान में भर दीजिए एक औंस मुसब्बर की जेली या रस में रखाने योग्य हाईड्रोजन पेशेक्साइ 3 प्रतिशत का एक चम्मच मिलाकर कान में डालें। पहले एक दो मिनट मालिश भी करें। इसी समय पशु के कान को साडत्र कर साफ कर दें इससे बराबर साफ करते रहिए जब तक की परेशानी दूर न हो जाए।

मिर्गी रोग- खराब खाने के खमीर को छोड़कर प्रतिदिन के पशु आहार में खमीर के 20-50 एमजी की काम्पलेक्स के साथ और अधिक बी-6 और बी-3 मिलाकर मिर्गी के रोगी को पशु प्रतिदिन देना चाहिए। साथ ही लेसिथिम भी रोज-2 देना चाहिए। और बडे नस्ल के कुत्ते या बिल्ली को 100 मिलीग्राम देना चाहिए। बिल्लियों को प्रयेक विटामिन 25 एमजी ही देना चाहिए। पशु में बी-6 की कमी ही अकेला मिर्गी रोग के लक्षण पशु में ला सकता है। बिल्लयों को को विशाक्त रासायनिक तत्व खाने में मिर्गी रोग हुआ करता है। पहले रोगी के पेट को साफ कराएं बीटामिन सी खाने में दें। इसके साथ ही जिन्क बी-9, बी-12 अवश्य अपने पेट को दीजिए। मिग्री के रोगी व्यक्ति में एमिनोएसिड टौराइन और टिरोसिन देना चाहिए। टिरोसिन एक ऐसा एमिनों एसिड है जिसके अभाव का कमी होने प्राणी मर सकता है। मनुष्य की मात्रा 500 एमजी का पालतू पशु के वजन से भाग दीजिए और उसी मात्रा में दीजिए। बिटामिन ए और महत्वपूर्ण शरीरिक विष निष्कासन की दवा है।

जूँ/पिसू- पशु को दुगनी मात्रा में खमीर खाने को दीजिए। विशेषकर गर्मी के दिनों में और रोज-रोज उसे दो दाना लहसुन की चटनी खाने को दीजिए। एक चम्मच खमीर बिल्ली और छोटे नस्ल की दीजिए खाने के चम्मच से एक चम्मच बड़े नश्ल के पशु को दीजिए। रोगी पशु को बिना एक दिन नागा किए यह दवा देना चाहिए।

सेब का सिरका पशु को पानी के साथ पिलाइए या खाने के साथ दीजिए पशु के सुरक्षात्मक को देखते हुए रायलजेली या शहद उत्पाद देते रहना चाहिए। इससे रोग से पीड़ित पशु जल्द ठीक होने लगता है। खाने योग्य हाइडोजन पेरोक्साइउड दो औंस मुसब्बर के रस के सथ मिलाकर दें तथा पशु के बदन बालों पर छिड़काव भी करें। इससे त्वचा रोग दूर होते हैं। इसके साथ ही टीमसन का प्रयोग पिसुओं को भगाने के लिए कर सकते हैं।

घर के प्रयोग हेतु आधा कप बोरिक एसिड या बोरैक्स नमक ओरटेलकम ऐ बोतल में रख लें। इससे फर्नीचर फर्श की सफाई करें। कपड़ों पर भी छिड़काव करें। इसके छिड़काव से मच्चर मक्खियों के निजात मिले भी नीबू पर बनें द्रव रोगी पशु पर छिड़काव करें। नीबू संतरा अंगूर के छिके या पूरे फल को पानी में उबाल कर छानकर स्प्रै से छिडकाव करें इसके चाय भी आप दे सकते हैं।

पेट क्रमी- 1-1/2-2 लहसुन का पोट 1/2-2 चम्मचम चावल का कन या चोकर और कटा हुआ

कच्चा गाजर और वीट रोगी पशु को देना चाहिए। यह रोग से संयम और शारीरिक मल की सफाई भी करता है। लहसुन संयमित करता है और यह हृदय कमी के लिए भी अच्छा होता है। मुसब्बर का रस शारीरिक मल की सफाई के लिए क्लोरोफिल के साथ सेब का सिरका पानी के साथ देना चाहिए। शीशम का बीज फीग का गुलर पीसा हुआ कद्दू का बीज और नारियल देने से कमी का निकालकर बाहर करता है।

मस्सा - ऐसी स्थिति में रोगी को कुछ दिन तक उपवास कराना होता है। इस समय रोगी को नींबू का रस तरल क्लोरोफिल व कैफी एनिमा भी देना चाहिए। सेब का सिरका पशु के शरीर की एसिडिटी को बाहर करता है। अगर शरीर में कई मस्से निकल आए हैं तो पानी के साथ ही अर्थोफोस्फारिक एशिड का प्रयोग करना चाहिए। यह दवाएं रोगी के वजन के अनुरूप ही देनी चाहिए। इसके लिए अधिक से अधिक लहसुन की चटनी खिलानी चाहिए। इसके साथ ही पाचक इन्जाइम व केलप भी दें। इससे धीरे-धीरे मस्से दूर हो जाते हैं। इसके साथ ही नींबू का रस दिन में तीन बार अवश्य की लगाइए। प्याज की चटनी को 15 मिनट तक लेप करें। अण्डी के तेल में कस्टर सोडा मिलाकर सस्से पर लेप करें। काली चाय के पैग से 15-20 मिनट तक सेंक रोज करना चाहिए। प्याज में नमक मिलाकर मस्से पर बॉधने से भी मस्सा ठीक होता है। लहसुन के एकल पोट को चीर कर मस्से को ढ़कने से मस्सा ठीक हो जाता है। मस्से पर कली के चूने का लेप लगाने से भी मस्सा ठीक होता है।

बुखार/वाइरल रोग - यदि किसी भी पशु को बुखार है तो उसे तरल हल्का आहार देकर उपवास कराना चाहिए। यह विधि रोगी का प्रारम्भिक उपचार है। इस समय रोगी को विटामिन सी अवश्य ही देना चाहिए। इस समय अधिक मात्रामें पौषटिक आहार नहीं देना चाहिए। रोगी को तब तक तरल आहार पर ही रखें जब तक कि रोगी का बुखार ठीक न हो जाए। जब रोगी सामान्य हो जाता है तो उसके शरीर का तापमान 101.05 एफ सामान्य न हो जाए। स्वस्थ्य होने पर ही पूर्ण आहार देना चाहिए। अगर बाद में फिर बुखार आता है तो उसे तुरन्त ही उपवास कराना शुरू कर दे। उपवास की स्थिति में रोगी को पर्याप्त मात्रा में तरल पदार्थ पानी में शहद बारली पानी अंगूर या सेब का रस देते रहे। यह पशुरोगी के वजन के हिसाब से 2 से 5 चम्मच दिन में तीन-चार बार दे सकते हैं। सदैव अपने पालतू का ताजा और साफ पानी ही पीने के लिए दें। इस समय नींबू पानी भी दे सकते हैं। सेब का सिरका नींबू के स्थान पर दो तीन चम्मच तीन बार दे सकते हैं। मुसब्बर का रस तरल क्लोरोफिल के साथ देने से रोगी की पाचन क्रिया ठीक रहती है। यह यकृत की सफाई कर हल्का दस्तावर होता है। शहद और शहद उत्पाद रोगी के प्रतिरोधक शक्ति के मजबूत करता है। लहसुन एण्टीबायोटिक का काम करता है इसलिए इसे किसी भी तरह से खिलाते रहना चाहिए।

तनाव - पाचक इन्जाइम खाना को पूरी तरह से पशु के अंग में मिल जाने के लिए अवश्य ही दें। हफ्ते में एक दिन उसे उपवास कराएं। इससे पाचन क्रिया को आराम मिलता है। मुसब्बर का रस तरल क्लोरोफिल का रस अवश्य ही दें। यह रोगी के विसाक्त तत्व शरीर से बाहर निकालता है। शहद तनाव दूर करने के लिए अवश्य ही देना चाहिए। इस समय इसे शहद और शहद उत्पाद देते रहें। इसके साथ ही लहसुन एण्टीसेफिटक होता है। इसलिए इसे बराबर वजन के अनुसार देते रहें। थायरायड ग्रन्थि के श्राव को संतुलित करने के लिए केल्प अवश्य ही दें। सेब का सिरका अवश्य ही देते रहना चाहिए।

लकवा/रीड की हड्डी- रीढ़ की हड्डी के रोगी को सरसों का प्लास्टर करना चाहिए। एक कप उबले पानी में एक चम्मच सरसों का पाउडर मिलाकर गर्मा-गरम ही लगाएं। इसे दो कपड़ों में लिपेट कर पश को प्रभावित वाले अंग पर बॉध दें।

अण्डे का प्लास्टर लगाना भी फायदे मंद होता है, किन्तु इसे चाटने न दें। यह दस्तावर होता है। रोगी को पाचक इन्जाइम देते रहना चाहिए।

त्वचा रोग - त्वचा रोगों से बचने का साफ-सफाई इसका सर्वोत्तम साधन है। जरूरी है कि पशु की अच्छी-सफाई के लिए उसे समय-समय पर सफाई अवश्य करते रहना चाहिए, किन्तु उसे तरल पदार्थ अवश्य ही पर्याप्त मात्रा में देते रहें। इस अवधि में दस्तावर औषधियों से बचें नींबू जूस के साथ ही क्लोरोफिल व एसिडोफिल के साथ ही एनिमा दें। इसे पशु को मुसब्बर का रस तरल क्लोरोफिल, एलोवेरा हाइड्रोजन पेरोक्साइड अवश्य ही देते रहें। पाचक रसायन अवश्य ही देना चाहिए। लहसुन से शारीरिक मल की सफाई होती हैं। इसलिए उचित मात्रा में अवश्य ही देते रहें। यह त्वचा को चमकीला बनाता है। सेब का सिरका पशु के लिए फायदे मंद होता है। बीट और गाजर का जूस लीवर की सफाई के लिए अवश्य ही दें। रूखी-सुखी त्वचा हेतु इसे अवश्य ही देना चाहिए।

आघात - आघात से उबरने के पश्चात रोगी को तरल पोषण से भरपूर आहार 24 घंटे तक देना चाहिए। इससे एक चम्मच शहद 1/2 चम्मच वैरांडी या लाल शराब दिन में दो से तीन बार दें। रोगी आघात से उबर गया है तो बकरी के दूध में शहद मिलाकर दें। साइडर सिरका का शहद, पानी में मिलाकर रोगी को दे सकते हैं।

विषपान - विषपान कर लेने पर रोगी को उपवास पर रहना चाहिए। किन्तु अधिक से अधिक तरल पदार्थ देते रहना चाहिए। तब तक रोगी सामान्य न हो जाए। रोगी के सामान्य होने पर ही भोजन दें। रोगी को दस्तावर दवा एनिमा रोज दें। क्लोरोफिल के साथ ही मुसब्बर का रस भी देते रहे। आघात स्थिति में बाद रोग को सामान्य शुद्ध पानी देते रहें। स्लीपरी एलम सिरप, शहद, पानी के साथ दिन में दो तीन बार दें। इससे क्षति ग्रस्त ऑते ठीक होती हैं। बचे अण्डे की उजली जर्दी पेट की जलन को कम करता है। ऐसे में रोगी को परमॉगनेट आफ पोटॉश 1/2 चम्मच 1/2 पीन्ट पानी में दें। इस समय लहसुन और केल्प विषाक्त तत्वों को निकालने हेतु अवश्य ही देते रहें। विषाक्त आहार खाने पर रोगी को सिरका शहद पानी तरल क्लोरोफिल देते रहें।

दर्द शान्ति - दर्द से कराह रहे रोगी को आराम और उपवास की प्रथम सलाह है जिस रोगी के दर्द के साथ बुखार या घाव हो इससे बुखार घट जाता है घाव का फैलाव कम होता है। इस समय रोगी को मुर्गी का सीरूआ और सब्जियों का रस देना चाहिए। यह उपयुक्त पोषण से भरपूर होता है। इसके प्रयोग से दर्द दूर होता रहता है और घाव तेजी के साथ भरता है। तरल क्लोरोफिल शरीर में शर्करा को संतुलित रखता है। कैलशियम को संतुलित करने में मद्द करता है। कैलेशियम दर्द घाव को भरने का काम करता है। आवश्यक मात्रा में केल्प आयोडीन और खनिज तत्व रोगी के शरीर में पहुॅचाकर रोगी को आराम करने देना चाहिए। अधिक खून बह गया है तो एण्टीबायोटिक दवा लेने से दर्द है तो होगा पर रोगी को विटामिन भी दें। खाने के साथ ही मट्ठा दें पाचक इन्जाइम खाना हजम करने हेतु दें। पोटैशियम से भी दर्द दूर होता है। जई या वरली का पानी हमेशा देते रहे।

मोटापा - अधिक मोटापा हर प्राणी के लिए नुकसान पहुॅचाता है। इसमें भी सर्वप्रथम साथ-सफाई की आवश्यकता होती है। इसके साथ ही रोगी को उपवास अति आवश्यक है। इस समय जरूरत होती है एनिमा की क्योंकि मोटे प्राणी को कन्शटिपेशन रहता है, उसे मुसब्बर रस क्लोरोफिल के साथ दें। इस समय खाना खाने के लिए बाद पाचक इन्जाइम जरूरी दें। केल्प देने से आवश्यक आयोडीन रोगी को मिल जाता है। सेब का सिरका पानी में मिलाकर पिलाइए। ऐसे रोगी को लहसुन भी देना चाहिए, क्योंकि लहसुन पेट की गन्दगी को साफ करता है। ❑

पता : जी0 एफ0-1,पशुपालन कालोनी,
बादशाहबाग, फैजाबाद रोड,
लखनऊ-226007.
मो0 : 9956696645

सच्चा दोस्त

(बाल कविता)

● मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

सुख-दुरूख में साथ निभाता
कठिनाइयों में हौसला बढ़ाता
गलत राह से सदा बचाता
वही सच्चा दोस्त होता ।

संकट में सहायक होता
मंजिल सही दिखाता
पथरीली राह में फूल बन जाता
वही सच्चा दोस्त होता ।

सच्चा साथी कभी न लड़ता
हमेशा मिलजुल कर रहता
बातें प्यारी -मीठी, सच्ची करता
वही सच्चा दोस्त होता ।

❑❑❑

पता : ग्राम रिहावली डाक तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा 283111
मो. 9627912535

'रामराज्य आंदोलन की औपचारिक सहमति का अवसर'

— डॉ राघवेन्द्र शुक्ल'

22 जनवरी,2024 का दिन एक ऐतिहासिक तिथि बन चुका है, जो रामराज्य आंदोलन की औपचारिक सहमति का अवसर बना। जब सक्रिय भूमिका के साथ रामराज्य आंदोलन के सूत्रधार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बनें, क्योंकि वह राम के अस्तित्व को स्वीकार करने की मर्यादा को जानते हैं। निश्चय ही वे रामराज्य के दर्शन को आत्मसात कर चुके हैं। क्योंकि रामलला का महत्व केवल धार्मिक आधार से परिलक्षित नहीं,मानवता के प्रतिबिंब से स्थिर है। बीती 22 जनवरी को भारत में ही नहीं,बल्कि संसार भर में राम नाम का गान हुआ राम के चरित्र की व्याख्या हुयी। सर्वत्र राम के दर्शन की समाख्या हुयी। वैसे तो 22 जनवरी इतिहास की साक्षी बन चुकी है, परन्तु यह शासन प्रशासन की राह भी बन सका। प्रधानमंत्री ने कोई औपचारिक आह्वान तो नहीं किया,फिरभी अनौपचारिक संदेश तो अवश्य दिया। पृथ्वी के समस्त शासकों व प्रशासकों को सावधान हो कर राम के चरित्र से प्रेरणा लेनी चाहये। शासनतंत्र के लिये रामराज्य का आदर्श दिशा निर्देशक है। राम का नाम मानवता के लिये समाधान और सफलता की कसौटी है।

रामराज्य की परिकल्पना को सदियों से परखा गया। हर युग में राम का चरित्र सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक तुलाओं पर मापा गया। धर्म का गुरूत्वाकर्षण चारित्रिक गुणों में भार उत्पन्न कर सका, त्रेता में भी और आधुनिक काल में भी। रामावतार की महिमा मानव स्वरूप की मर्यादा में अन्तर्निहित हुयी। राम ने पुरूषोत्तम की भूमिका को परिभाषित किया। राम ने लोक नायक के महानतम आदर्श को जीवित किया। राम ने विश्व के महायोद्धा को क्षमा, विनय, त्याग, सौहार्द, मैत्री, सदाचार, सदाशयता, साहचर्य और सहनशीलता सहित समस्त मानवीय गुणों का कोष ही सौप दिया। ऐसा गरिमामय चरित्र न कभी हुआ,न कभी होगा।

रामराज्य का संदेश घर घर पंहुंचाने का दायित्व सभी कारसेवकों का है। राम के पथ पर चलने का संकल्प भारत में लेना है,जिसे विश्व में अपनाया जाय। अनुकरणीय राम चरित्र की पावन छाया पृथ्वी को समेट लेगी। राम का नाम सभी बाधाओं को दूर करने में सक्षम है। रामधुन यज्ञ के समान है। रामकथा हमारे संस्कार में गतिमान है। राम हमारी आत्मा में विराजमान हैं। राम के बिना हम शून्य हैं, निर्जीव हैं।

गत 22 जनवरी को अयोध्या में मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के साथ रामराज्य आंदोलन की स्वीकार्यता जनता में इसलिए अनिवार्य हो गयी, क्योंकि सक्रिय आंदोलन अब प्रतीक्षित नहीं रह सकता। संसार में रामराज्य का आगमन शुभ है। पृथ्वी के कोने कोने से रामधुन आनी चाहिये। राम का अश्वमेध यज्ञ त्रेतायुग में हुआ था,कलियुग में भी होना चाहिए। जिस प्रकार राम का नाम राम से भी बड़ा है- ठीक उसी प्रक्रिया रामराज्य भी राम से बड़ा है। तात्पर्य यह कि राम का नाम राम के चरित्र का

अवगाहन है, रामराज्य तो राम की महिमा का अनुकरण है,राम दर्शन ही राम के प्रभाव का प्रकाशमान है। भारत का प्रेमी राम का भक्त है। और राम भी भारत मां के पुत्र हैं। राम अपने को पृथ्वी मात का पुत्र, गौ माता का पुत्र, गंगा मां का पुत्र, तुलसी मां का पुत्र, और गायत्री मां का पुत्र मानते हैं। वे सृष्टि के अधीन प्रकृति की गोद में लीला धारण करते हैं। माता कौशल्या, कैकेई और सुमित्रा को बाल क्रीड़ा से मंत्रमुग्ध करते हैं। जबकि वे दासी मंथरा को भी माता की तरह मानते हैं। यह उनके चरित्र की एक झलक है। वे अपनी जनता का इतना सम्मान करते हैं,कि एक सामान्य नागरिक के भ्रम को भी माथे लगाते हैं, जन जन की भूल को सकारते हैं। कैसे राजा हैं, ये? अयोध्या के राजा, अवध के नरेश, देश के चक्रवर्ती सम्राट। इससे दूर, वे मानवता के नायक हैं। भगवत्व से दूर, वे साधारण मानव हैं। लेकिन कलियुग यह नकार नहीं सकता कि वे मानव रूप में अवतार को तीर्थ धाम की तरह पावन चरित्र धारण करते हैं। राम के अवतार में चरित्र का वटवृक्ष अमृत के समान फलदायी है। अयोध्या में ऐसे नयनाभिराम राम के राज का रहस्य यही है। जो मनुष्य कुछ नहीं कर सकता, वह राम राम जरूरबोल सकता है,रट सकता है, जप सकता है। राम नाम की माला ही पर्याप्त है, जीवन संग्राम के लिये। मानव का जीवन संघर्ष रामकथा की सुरसरि में शांत व संतप्त होता है। रामराज्य का आदर्श राजनीति और कूटनीति का मूल मंत्र है। इसलिए सम्पूर्ण विश्व में रामराज्य के दर्शन का प्रचार प्रसार मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। विश्व शांति का यही सबसे बड़ा उपाय है। राम का चरित्र उन सभी के लिये अनुकरणीय है,चाहे जिस देश का वासी हो। वर्ग, जाति, धर्म, सम्प्रदाय या देश काल की बाधा नहीं है। मानव मात्र के लिये राम अनुकूल हैं, पथप्रदर्शक हैं। राम का ध्यान जीवन के लिये उपयोगी और कल्याणकारी है। राम का जीवन लोक हित के लिये समर्पित होकर सबका आदर्श बना। राम का संदेश घर घर में पंहुचना चाहिए। इस कर्तव्य को पूरा करने का समय आया है। अब किसी भी हाल में ठहरना नहीं है,आगे बढ़ना है। रामभक्तों की तत्परता से रामराज्य आंदोलन जन जन तक प्रसारित होगा। राम की शिक्षा खेत खलिहान से होकर कल कारखानों तक प्रचलित होनी चाहिए। राम हमारे आराध्य हैं,और साथी भी हैं। वे सबके हितैषी, मित्र और शुभचिंतक भी हैं। उनका जैसा संरक्षक अन्य कोई नहीं।

आज राम मंदिर अयोध्या की शोभा बढ़ा रहा है। बीते आंग्ल माह की 22 वीं तिथि को भव्य राम मंदिर में राम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है। इस अवसर पर भारत के प्रधानमंत्री उपस्थित रहे। पीठाधीश्वर शंकराचार्यों सहित सभी साधु संत महात्मा मुनि विद्वान मनीषी गण आमंत्रित थे। धर्मप्राण रामभक्तों का सानिध्य अनिवार्य है, प्रेमी जनों का शोभायमान वांछित है। देश विदेश से बड़ी संख्या में लोगों के दर्शनार्थ आगमन की योजना है। इस हेतु व्यापक व्यवस्था की गयी है। क्योंकि ऐसा विशाल आयोजन प्रथम बार हुआ है। इसकी प्रबंध व्यवस्था में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की भूमिका अग्रणी रही थी। फिरभी, राम जनों का संयम व अनुशासन अति उत्साहवर्धक तथा सहज व स्वाभाविक था। नागरिकों की एकता, सूझबूझ व सहिष्णुता से सबसे महान शुभ कार्य अवश्य संपन्न हो सका। राम लला इस संसार को नित अपना नवीन दर्शन देंगें, सबके लिये सुलभ रहेंगे। यहां राम के दर्शन के लिये पृथ्वी पर कोने कोने से हर निवासी कम से कम एक बार अवश्य आना चाहेगा,अपना जीवन को कृतार्थ करना चाहेगा।

रामराज्य ही वास्तविक राज्य है। राम की राज व्यवस्था सुख शांति की परिचायक है,समृद्धि और प्रगति की राह है। यह समाज की उन्नति का मार्ग है। देश काल का भूत, वर्तमानकाल और भविष्य है। यह भारत का राज दर्शन है, राज काज

है,राज धर्म है। यह सभी देशों का राज मार्ग है। परन्तु, न तो त्रेता में और न तो द्वापर में राम विरोधी शक्तियों की कमी थी, न आज कलियुग में अभाव है। आज महा कलिकाल में राम का विरोध मुखर है। विभिन्न मुखौटों में राजनीति की दुहाई देने वाले सनातध विरोधी अब सीधे राम पर आक्रमण की मुद्रा में हैं। बार बार राम को नकारने के बाद वे एकजुट होकर राम पर प्रहार कर रहे हैं,सनातन को मिटाने का स्वप्न देख रहे हैं। न्यूनाधिक यह स्थिति सर्वत्र है। राम का विरोध करते करते वे राष्ट्र का आपमान करने लग गये हैं। राम विरोधी किसी भी सीमा तक जा सकते हैं,रावण के मायावी योद्धाओं की तरह। स्थिति वही है,बस दृश्य बदला हुआ है। जिस प्रकार सत्य की अग्नि असत्य की घासफूंस को जला कर राख कर देती है,उसी तरह राम के विरोधियों का विनाश भी सुनिश्चित है। राम ने संसार में मैत्री का बिगुल बजाया, प्रेम का मंत्र फूंका। लेकिन इसी धरती पर निशाचर भी रहते हैं,सत्य का विरोध करना उनकी नियति है। इसलिए,राक्षसों व दैत्यों से भयभीत नहीं होना चाहिए। आसुरी शक्तियों का साहस के साथ सामना करना समीचीन होगा। राम ने भी तो राक्षसों से तपोभूमि को कई बार मुक्त कराया था। राम के चरित्र ने सभी आस्थाओं को भक्ति की माला में पिरो दिया है। मातृभक्ति, पितृभक्ति, गुरूभक्ति, देशभक्ति, भ्रात प्रेम, जन प्रेम-इन सबको एक सूत्र में बांध दिया। उन्होंने लोक व्यवहार और लोक परम्परा के बीच सेतु बनाया। वे धर्म के पालन के स्वयं दृष्टा बन गये,तथा मानव आचरण संहिता के नियामक बनें।

22 जनवरी का दिन देश के ऐतिहासिक पृष्ठों में अंकित हो चुका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 11 दिवसीय उपवास व्रत चलता रहा। सम्पूर्ण भारत से लोग अयोध्या के लिये अपने अपने साधनों से चल दिये थे, या चलने की तैयारी कर रहे थे। प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर जन सैलाब उमड़ा, विशेषकर हिन्दू रामभक्तों का सम्पूर्ण समाज रामन मंदिर के दर्शनार्थ अवश्य पंहुचा। हालांकि सुरक्षा व्यवस्था की बड़ी चुनौती थी, लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हिमालय की तरह अयोध्या के सुरक्षाकवच बने रहे। वे पल पल की सूचना ले रहे थे। केंद्र सरकार राज्य सरकार से आश्वस्त थी। सारी दुनियां की दृष्टि 22 जनवरी पर लगी थी। भारत ही नहीं,अनेक देशों से रामभक्तों का आगमन जारी है। किसी भी अनिष्ट से निपटने के लिये अर्ध सैनिक बल और सुरक्षा एजेंसियां पहले से चाक चौबंद हैं। फिरभी, शैतान के षड़यंत्र से अधिक सावधान रहने की आवश्यकता होगी। बार बार समीक्षा हो रही है और निरंतर सतर्कता बरती जा रही है।

रामराज्य का हश्य उपस्थित है। सहस्त्रों जन समूह राम गान कर रहे हैं,रामकथा में संलग्न हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है,कि राम का आगमन हो रहा है। राम आये हैं,तो रामराज्य भी आयेगा। इसीलिए,मैं कहता हूं कि 22 जनवरी से रामराज्य का श्रीगणेश हो चुका है। भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण धरती पर रामराज्य आयेगा। रामराज्य लोक मानस पर छा जायेगा, और वह संसार को अपनी छत्रछाया से आच्छादित करेगा। समस्त देशों के लिये रामराज्य के आदर्श की सहमति बनती जा रही है। राज्याध्यक्षगण इसे समझने,अपनाने और जीवन में धारण करने की चाह रखते हैं। विश्व राममय होगा,रामराज्यमय होगा। ❑

(लेखक भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, नई दिल्ली के सदस्य और रामराज्य आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक हैं।)

पता : 1/53,विनयखण्ड,
गोमतीनगर,
लखनऊ-226010.

रामराज की प्रासंगिकता की जन स्वीकार्यता

- श्रीमती राजश्री दुबे
समीक्षा अधिकारी
उत्तर प्रदेश शासन/
संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश सचिवालय संघ।

रामराज एक व्यापक अवधारणा है जिसे शब्दों में सीमित नहीं किया जा सकता है। आज हर तरफ रामराज की बात हो रही है। किंतु रामराज की प्रासंगिकता की जन स्वीकार्यता जानने से पहले हमें रामराज की अवधारणा को अच्छी तरह से समझना होगा।

हिंदू संस्कृति में श्री राम द्वारा किया गया आदर्श शासन ही रामराज के नाम से प्रसिद्ध है। श्री रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने रामराज पर पर्याप्र प्रकाश डाला है। किंतु, जब रामराज की प्रासंगिकता की जन स्वीकार्यता की बात आती है तो हम किस स्वीकार्यता की बात करते हैं? क्या सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय स्वीकार्यता जहाँ तथ्यों को भारतीय साक्ष्य अधिनियम -1872 के तहत मान्यता और स्वीकार्यता प्राप्त होती है या फिर मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के शासन संबंधित दृष्टिकोण की प्रासंगिकता की स्वीकार्यता की बात करते हैं। श्रीराम तो कभी राज करना ही नहीं चाहते थे, यदि ऐसा होता तो सोने की लंका भी उन्हीं की होती। श्री राम जी ने तो ऐसा राज्य स्थापित किया जहाँ सबको समान अधिकार मिलते थे। प्रभु श्री राम के शासन काल में सब निरोगी रहते थे। कोई भी रोग या पीड़ा से ग्रसित नहीं था। सभी स्वस्थ, बुद्धिमान , साक्षर, गुणज, ज्ञानी तथा कृतज्ञ थे। यहां तक कि स्त्रियां भी बिना कष्ट के प्रसव करती थी। यही तो प्रभु श्री राम का आदर्श राज अर्थात् रामराज है।

रामराज को ठीक प्रकार से जानने के लिए पहले श्री राम जी को जानना होगा।

किंतु, हम किन श्री राम जी को जानते हैं?

वो श्री राम जिन्होंने एक आदर्श पुत्र होने का प्रमाण दिया और पिता के कहने पर अयोध्या का राज छोड़कर चौदह वर्ष के वनवास के लिए चल पड़े थे और अपने पीछे भाई भरत को छोड़ गये ताकि राज्य और प्रजा पर किसी प्रकार की विपत्ती ना आये य वो श्री राम जो अपनी पत्नी माँ सीता से इतना प्रेम करते थे कि सोने का हिरण देने चल पड़े और फिर उन्हें पाने के लिए समुद्र पर रामसेतु बनायाय वो श्रीराम जिन्होंने अपनी प्रजा के कहने पर माँ सीता की परीक्षा ली और अपने ही बच्चों पर प्रश्न किया। कि वे किसकी संताने हैंय वो श्रीराम जिन्होंने सीता स्वयंवर में शिवजी के धनुष को तोड़ाय वो श्रीराम जिन्होंने एक भीलनी के हाथों से जूठे बेर खाये य वो श्रीराम जिन्होंने प्रकृति के साथ ऐसा सामंजस्य स्थापित किया कि वे पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, नदी-समुद्र सभी के साथ संवाद कर सकते थे। वो श्रीराम जिन्होंने सदैव खोया पाया कुछ भी नहीं। यदि हम उन श्रीराम जी के राज की बात कर रहे हैं जिन्होंने इस प्रकार अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखा कि अपना दुःख कभी व्यक्त नहीं होने दिया और सदा अपनी प्रजा को प्रसन्न रखा,

तो अब मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के आदर्श राज अर्थात रामराज की प्रासंगिकता मेरे नजरिये से-

जिस दिन हम सभी श्रीराम के आदर्शों के अनुरूप चलने लगेंगे। उस दिन राज्य रामराज्य कहलाने लगेंगे। एक राज्य को यदि राजा चलाता है तो प्रजा का भी परस्पर सहयोग होता है। पर क्या हम आज श्रीराम की उस अवधारणा पर चल रहे हैं, जो उन्होंने राज्य के लिए बनायी थी?

रामराज एक आदर्श राज के रूप में वर्णित

किया गया है, क्योंकि रामराज में सभी नागरिकों को समान अधिकार मिलते हैं। किसी को भी भोजन, वस्त्र, आवास या शिक्षा की कमी नहीं होगी। न ही किसी प्रकार का भेदभाव या ऊत्पीड़न होगा। श्री राम जी केवल अपनी प्रजा की उन्नति के बारे में ही सोचकर सदैव कर्मरत रहते थे। इसी प्रकार जिस दिन हम सभी अपने परिवार के साथ-साथ देश, राज्य और अपने समाज के कल्याण बारे में सोचना प्रारम्भ करके निःस्वार्थ भाव के साथ कार्य करेंगे तो सर्वकल्याण के साथ स्वकल्याण भी होगा और यही तो रामराज है। जब हम भारत के सभी निवासी रामराज की अवधारणा पर चलेंगे तब उसकी स्वीकार्यता पर भी प्रश्न नहीं उठेगा। लेकिन आज हम भेदभाव, द्वेष, जलन, अहम आदि भावों से भरे हुए हैं। जब तक हम इन भावों से भरे रहेंगे तब तक रामराज को स्वीकार्यता पर प्रश्नचिह्न लगता रहेगा। रामराज की स्वीकार्यता हम सबके स्वभाव और कार्य से ही है। हमें यह भी देखना होगा कि जिस प्रकार श्रीराम ने त्याग किये क्या हम ऐसा कर सकते हैं?

भारत में आज आदर्श गांव तो कई है किन्तु यदि हम श्री राम जी के आदर्शों पर चलना प्रारम्भ कर दें तो वो दिन दूर नहीं जब रामराज की प्रतिष्ठा दोबारा देश में होगी और जिस दिन ऐसा होगा उस दिन श्रीराम से अधिक प्रसन्न और कोई नहीं होगा।

अयोध्या में 22 जनवरी 2024 के दिन मृगशिरा नक्षत्र और अभिजीत मुहूर्त में श्री राम के पाँच वर्षीय बाल स्वरूप की प्राण प्रतिष्ठा हुई। देश भर में दीपोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर आइये हम सभी यह प्रण लें कि रामराज को हम दोबारा प्रतिष्ठित करेंगे।

अंत में यही कहना कहना चाहूँगी कि श्री राम जी को बाहरी तौर पर ढूंढने से अच्छा है कि हम उन्हें अपने भीतर स्थापित करें। आत्मिक तथा वैचारिक शुद्धता के साथ, हनुमान जी की तरह श्री राम जी को अपने हृदय में बसायें। और मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम जी के गुणों को अपने भीतर आत्मसात करें। रामराज स्वतः स्थापित हो जायेगा।

जय सियाराम।

किसानों के हितों के लिए कटिबद्ध है योगी सरकार

हाईटेक नर्सरी से संबंधित कार्यो को प्राथमिकता

पर ड्रॉप मोर क्रॉप, माइक्रोइरीगेशन में शून्य प्रगति करने वाली पंजीकृत निर्माता फर्मों को ब्लैक लिस्टेड करने के दिए निर्देश

प्रदेश के उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार एवं कृषि निर्यात राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिनेश प्रताप सिंह ने अपने मंत्री आवास से वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से विभागीय अधिकारियों के साथ औद्यानिक विकास योजनाओं/कार्यक्रमों की प्रगति की बिन्दुवार समीक्षा की।

बैठक में उद्यान मंत्री ने निर्देश दिए कि हाईटेक नर्सरी से संबंधित कार्यो को प्राथमिकता पर किया जाय। जिन जनपदों में हाईटेक नर्सरी से संबंधित कोई समस्या हो, उसका त्वरित समाधान किया जाय। उन्होंने कहा कि किसानों को उन्नत किस्म के बीज व अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने में हाईटेक नर्सरी की महत्वपूर्ण भूमिका है, इसलिए जिन जनपदों में हाईटेक नर्सरी स्थापित हो गयी है, उसका सुचा— रूप से संचालन सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने कहा कि किसानों के लिए संचालित योजनाओं के लिए आवंटित धनराशि का शत प्रतिशत उपयोग किया जाय। उन्होंने योजनाओं की धीमी प्रगति एवं आवंटित धनराशि का कम उपयोग करने वाले जिला उद्यान अधिकारियों पर नाराजगी व्यक्त करते हुए उन्हें कार्यों में सुधार की चेतावनी दी।

'सहकारिता'
पत्रिका के नियम

1. सहकारिता मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन हर महीने के तीसरे सप्ताह में होता है।
2. सहकारिता का उद्देश्य सहकारिता तथा विकास सम्बन्धी योजनाओं और समाचारों का प्रचार करना, सहकारिता के उद्देश्य और उपयोग से जनता को परिचित कराना तथा देश की आर्थिक समृद्धि के लिये प्रेरित करना है।
3. इसका वार्षिक मूल्य रू0 150.00 तथा आजीवन सदस्यता के लिए रू0 1500.00 मात्र है।
4. प्रकाशन, विज्ञापन, ग्राहक और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र-व्यवहार सम्पादक सहकारिता पो.बा. नं. 136 लखनऊ से करना चाहिए।
5. सहकारिता में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट किये गये विचारों से पूर्णतः अथवा अंशतः सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
6. सहकारिता पत्रिका के न मिलने की सूचना सम्पादक को मास के भीतर मिलनी चाहिए अन्यथा दूसरी प्रति भेजना सम्भव न होगा।
7. सहकारिता में प्रकाशनार्थ सामग्री-लेख समाचार आदि कागज मे एक ही ओर लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

सम्पादक
सहकारिता
पोस्ट बाक्स नं0 136
लखनऊ-226001

'सहकारिता' पत्रिका हेतु विज्ञापन की दरें

1.कवर पूरा पृष्ठ	रू0	15,000.00
2.विशिष्ट विज्ञापन (आर्ट पेपर पर)	रू0	10,000.00
3.साधारण पूरा पृष्ठ	रू0	5,000.00
4.आधा पृष्ठ	रू0	3,000.00
5.चौथाई पृष्ठ	रू0	1500.00

'सहकारिता' साप्ताहिक एवं मासिक का शुल्क

❑ एक प्रति-सहकारिता साप्ताहिक	रू0	3.00
❑ एक प्रति-सहकारिता मासिक	रू0	15.00
❑ वार्षिक-सहकारिता साप्ताहिक	रू0	150.00
❑ वार्षिक-सहकारिता मासिक	रू0	150.00
❑ सहकारिता साप्ताहिक (आजीवन)	रू0	1500.00
❑ सहकारिता मासिक (आजीवन)	रू0	1500.00
❑ साप्ताहिक एवं मासिक संयुक्त (आजीवन)	रू0	3000.00

प्रबन्ध निदेशक, यू.पी. को आपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ के पते पर शीघ्र मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनें।

वी0पी भेजने का नियम नहीं है।

कृपया पत्र- व्यवहार निम्न पते पर करें:-

सम्पादक
सहकारिता
यू.पी. कोआपरेटिव यूनियन लि0
14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग,
लखनऊ-226 001.

SAHKARITA
Feb-2024

RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

सहकारिता के सिद्धान्त

स्वैच्छिक और खुली सदस्यता

प्रजातांत्रिक सदस्य–नियंत्रण

सदस्य की आर्थिक भागीदारी

शिक्षा प्रशिक्षण और सूचना

स्वायत्तता और स्वतंत्रता

सहकारी समितियों में परस्पर सहयोग

सामाजिक कर्त्तव्य बोध